अंक 5 व 6

1997

चैतन्य लहरी

आपका मस्तिष्क यदि घमण्ड से परिपूर्ण है तो आप कभी सहजयोग को नहीं समझ सकते। आत्मा के विषय में जानने के लिए आपको गहनता में उतरना होगा और गहनता में उतरने के लिए वे सब विचार त्यागने होंगे जो आपको हवा में उड़ाते हैं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
जन्मदिवस पूजा (दिल्ली) 21.3.97

चैतन्य लहरी

विषय सूची

खंड IX 1997 अंक 5 व 6

(1) सहस्रार पूजा 4 मई 1997 कबैला 3

(2) प्रेरणा 3

(3) जन्मदिवस पूजा 21.3.97 दिल्ली 13

(4) शिवरात्रि पूजा 16.3.97 दिल्ली 18

(5) दिवाली पूजा 10 नवम्बर, 1996 पुर्तगाल 22

(6) अन्तर्राष्ट्रीय एकता प्रतिष्ठान 6.4.1997 नई दिल्ली 34

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भी अंश, प्रकाशक की अनुमति लिए बिना, किसी भी रूप में अथवा किसी भी जरिये से कहीं उद्धृत अथवा सम्प्रेषित न किया जाए। जो भी व्यक्ति इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करेगा उसके विरुद्ध दंडात्मक अभियोजन तथा क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावा दायर किया जा सकता है।

प्रकाशक :
निर्मल ट्रान्सफॉर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौढ़ रोड, पुणे 411038
'ई' मेल का पता–
marketing@nirmalinfosys.com
वेबसाइट: www.nirmalinfosys.com
Tel. 9120 25286537. Fax. 9120 25286722

प्रेरणा

माँ के अथक प्रयास को
आगे बढ़ाना है तुम्हें
मंजिल अभी दूर है
चलते ही जाना है तुम्हें।।

ज्ञान की रोशनी से
प्यार के इस सागर से,
दिल की गहराइयों से
बुझते हुए चिरागों को
रोशन करना है तुम्हें
आगे ही बढ़ना है तुम्हें।।

अर्ध विकसित हो अभी
पूर्ण खिलना है तुम्हें
माँ के आदर्शों पर ही
सदैव चलना है तुम्हें।।

प्यार ही प्यार है,
परम चैतन्य अपार है,
शक्ति अपरम्पार है,
प्रकाश चारों ओर है,
फिर भी भटक रहा
क्यों बेकार है मनुष्य

माँ अवतरित हैं,
कल्याण करने को,
आह्लादित हैं, व्याकुल हैं,
चिन्तित हैं, दात्री हैं,
ज्ञाता हैं, तब भी देखकर रो देती हैं
मनुष्य की अज्ञानता को।।

उठो संभलो, विचारो,
विश्व, निर्मल धर्म को
चहुँ ओर फैलाओ
ज्ञान, के दीपक हो तुम
इस तम को शीघ्र मिटाओ।।

इस घने अंधकार में
उजाले की किरणे हो तुम
इस फैले भष्टाचार में
सभी से पृथक हो तुम
माँ के आशीर्वाद से
आशीर्वादित हो तुम।।

सहस्रार पूजा

कबैला – 4 मई 1997

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम सब यहाँ सहस्रार पूजा करने के लिए एकत्रित हए हैं। आप सब ने महसूस किया है कि सहस्रार हमारे सूक्ष्म तंत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। निः सन्देह यह एक महान दिन है, वर्ष 1970 में इसी दिन यह चक्र खोला गया था। परन्तु इससे आपने क्या प्राप्त किया, यह हमें देखना है।

उठते हुए कुण्डलिनी सर्वप्रथम आपके स्वाधिष्ठान में जाती है जहाँ आपका धर्म है और आपका धर्म स्थापित हो जाता है। नाभि चक्र पर, आप कह सकते हैं, नाभि चक्र के चहुँ ओर, आपका धर्म जो कि अन्तर्जात, पवित्र एवं शाश्वत धर्म है, स्थापित हो जाता है। तब कुण्डलिनी ऊपर को उठती है। धर्म के स्थापित होने के बावजूद भी हम समाज से थोड़े से अलग होने लगते हैं क्योंकि हमें महसूस होता है कि लोग अधर्मी हैं। उनका कोई धर्म नहीं। हमें यह भी लगता है कि उनके अधर्म के कारण कहीं हममें पकड़ न आ जाए। अतः उस स्थिति में हम सहजयोग की सीमाएं नहीं लांघना चाहते, सहजयोगियों तक, सहजयोग के कार्यक्रमों तक और अपने निजी सहज जीवन तक सीमित रहना चाहते हैं। निःसन्देह यह महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम इस चक्र का पोषण होना आवश्यक है क्योंकि यह नाभि चक्र के चहुँ ओर, जिसे आप स्वाधिष्ठान के नाम से जानते हैं, घूमता है। ये स्वाधिष्ठान चक्र एक प्रकार से अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है। जब धर्म स्थापित हो जाता है तो सूक्ष्म शक्ति कुण्डलिनी के माध्यम से सहस्रार को अधिक शक्ति पहुँचाने लगती है और स्वाधिष्ठान स्थित धर्म की शक्ति भी इसके साथ बहने लगती है। ऊर्ध्व गति को पा यह शक्ति सहस्रार में उठने लगती है। तब तक, मैं कहूँगी, हम पूर्ण सहजयोगी नहीं होते। क्योंकि **व्यक्ति सहजयोग के विषय में कट्टर भी हो सकता है। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो इतने कट्टर हैं कि वे उन लोगों से मिल तक नहीं सकते जो सहजयोगी नहीं हैं। वे उन लोगों से बात तक नहीं कर सकते और सदा ऐसे लोगों से मिलने से घबराते हैं जो सहजयोगी नहीं है। बेशक आसुरी प्रवृत्ति लोगों, जो सहजयोग के विरुद्ध हैं, इसके विरुद्ध बातें करते हैं, से मिलने की आपको कोई आवश्यकता नहीं परन्तु जो लोग सत्य साधक हैं, उनके पास जाना हमारा कर्त्तव्य है। अतः जब धर्म मस्तिष्क में स्थापित होने की स्थिति में पहुँच जाता है तब हम धर्म से ऊपर उठ जाते हैं, धर्मातीत हो जाते हैं। धर्मातीत होना अर्थात् धर्म हमारे अस्तित्व का अंग–प्रत्यंग बन जाता है। इससे हम वंचित नहीं हो सकते।** सहज धर्म हमारा अंग–प्रत्यंग बन जाता है और यह एक महान उपलब्धि है क्योंकि तब आपको कोई कर्म काण्ड नहीं करना पड़ता, अन्य लोगों से मिलने में आपको कोई घबराहट नहीं होती, आपको यह चिन्ता नहीं होती कि आपकी चैतन्य लहरियाँ बिगड़ जाएंगी, किसी से आपको पकड़ नहीं होती। नकारात्मक शक्तियों की पकड़ भी

आपको नहीं होती। कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। इसे मैं आपकी श्रद्धा का पूर्ण होना कहती हूँ। सहस्रार इतना ज्योतिर्मय हो जाता है कि आप धर्म बन जाते हैं। हम ईसा का उदाहरण दे सकते हैं। ईसा ने देखा कि एक वेश्या को पत्थर मारे जा रहे हैं। अब ईसा का वेश्या से क्या लेना–देना। परन्तु जब उन्होंने उस पर पत्थर पड़ते हुए देखे तो उसके सामने जाकर खड़े हो गए और लोगों से कहा कि जिसने कोई पाप नहीं किया वह मुझे पत्थर मारे। सभी लोग हैरान हो गए कि ये वेश्या की तरफदारी क्यों कर रहे हैं! ये तो एक धार्मिक व्यक्ति हैं, इन्हें भी वेश्या को पत्थर मारने चाहिएं। परन्तु वे तो सत्य पर खड़े थे। सहस्रार में जब यह स्थापित हो जाता है तो आपके साथ भी बिल्कुल ऐसा ही घटित होता है। आप सत्य पर डट जाते हैं।

धर्म और सत्य में थोड़ा सा अन्तर है। **धर्म में व्यक्ति अति धर्मी, असंगत रूप से धार्मिक बन सकता है**। वह दायें या बायें को जा सकता है। धार्मिक व्यक्ति स्वयं को अन्य लोगों से उच्च कोटि का मान सकता है। वह सोचता है कि अन्य लोगों को बचाने की क्या आवश्यकता है ? उन्हें नर्क में जाने दो, कौन चिन्ता करता है। धार्मिक व्यक्ति में इस प्रकार का दृष्टिकोण पनप सकता है। सहजयोग में मैंने कुछ ऐसे भी सहजयोगी देखे हैं जो अपनी ही विधियाँ शुरु कर देते हैं। आप ऐसा करें, यह ठीक रहेगा। आप वैसा करें, वह ठीक रहेगा। वे धर्म पर स्थिर नहीं हैं इसलिए भी लोगों को बताने लगते हैं कि ऐसा करो, वैसा करो। परन्तु सत्य के बिन्दु तक जब आपका उत्थान हो जाता है तो आप कोई कर्म काण्ड नहीं करते, कर्म काण्डों की आपको कोई आवश्यकता नहीं होती, आपको कोई चिन्ता नहीं होती क्योंकि आप धर्म में स्थिर हैं, सत्य पर खड़े हैं। सत्य धर्म से कहीं अधिक महान है। उदाहरणार्थ : एक व्यक्ति जो सत्य पर खड़ा है, उसे व्यर्थ के धार्मिक विचारों की चिन्ता नहीं होती। सहज धर्म के विषय में भी वह चिन्ता नहीं करता कि आखिरकार यह सहज है, यह सहज नहीं है। वह इससे ऊपर उठ जाता है, अर्थात् वह अपने अन्दर ब्रह्माण्डीय सत्य को देखता है। वह उस सत्य को देखता है जो सर्वव्यापक है। वह न केवल देखता है परन्तु जानता भी है और महसूस करता है कि वह सत्य पर स्थिर है। तो धर्म का सत्य में पुष्पीकृत होना अत्यन्त सुन्दर घटना है और यह घटना आप सबके साथ घटित होनी चाहिए। आप यदि केवल धर्म के स्तर पर हैं तो बहुत सारी चीज़ें लटकती रह जाएंगी। मैंने लोगों को अहम्–ग्रस्त होते हुए, पैसा बनाते हुए देखा है। कभी–कभी तो वे बिना मेरी आज्ञा लिए ऐसे गलत कार्य करते हैं जो सहजयोग के हित में नहीं है। इस बारे में उनमें नम्रता नाम की चीज़ नहीं है, वे यह भी नहीं समझते कि सत्य पर खड़े होना धर्म है या असत्य पर। तो हमें धर्म की नींव–सत्य–पर जाना होगा। जैसा मैं पहले बता चुकी हूँ, यह जीवन वृक्ष है जिसकी जड़ें मस्तिष्क में हैं और डालियाँ शरीर में।

आपको हर चीज़ की जड़ों (तह) में जाना होगा और यहाँ तक आप तभी पहुँच सकेंगे जब आप सहस्रार में पूर्णतः स्थापित हो जाएंगे। हमारे सभी विचारों या स्वरूपों की जड़ें सहस्रार में हैं। अब हम धार्मिक हो गए हैं। धर्म की जड़ क्या है ? हम धार्मिक क्यों बनें ? धार्मिक बनने की क्या आवश्यकता है ? विश्व में बहुत से अति अधार्मिक लोग भी बहुत अच्छी तरह से रह रहे हैं। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि बाह्य रूप से हमें लगता है कि वे अत्यन्त प्रसन्न हैं, ठीक–ठाक हैं, और मज़े ले रहे हैं। जबकि हम संभवतः सांसारिक मज़े से वंचित हैं। तो

केवल धर्म की स्थिति में हमारे लिए चीज़ें बहुत महत्वपूर्ण बन जाती हैं। सत्य पर खड़े हुए चाहे वे इतनी महत्वपूर्ण न हों। ऐसी बहुत सी चीज़ों के बारे में मैं आपको बता सकती हूँ कि सहजयोगी किस प्रकार डगमगा जाते हैं। धर्म की स्थिति प्राप्त करने के बाद भी वे कई बार डगमगा जाते हैं। मैंने उन्हें नशे, शराब तथा अन्य प्रकार के व्यसन त्यागते हुए देखा है। यहाँ तक कि उनकी भाषा में सुधार हो जाता है तथा उनका व्यवहार बदल जाता है। निःसन्देह वे पहले से अधिक विनम्र हो जाते हैं। परन्तु फिर भी वे इस बात के प्रति चेतन होते हैं कि वे धर्म पर खड़े हैं। इस चेतना को लुप्त होना है।

सहस्रार की हमारी इस स्थिति में यह चेतना लुप्त हो जाती है क्योंकि 'सत्य प्रेम है' और 'प्रेम सत्य है'। इस बिन्दु पर आकर कुण्डलिनी अनहद् चक्र से मिलती है। आप जानते हैं कि हृदय की पीठ यहाँ (सहस्रार में) है। अतः जब कुण्डलिनी अनहद् चक्र का भेदन करती है तो मस्तिष्क में, सहस्रार में, सत्य प्रवाहित होने लगता है, उस सत्य का जोकि प्रेम है। **सत्य जो सत्य है तथा सत्य जो प्रेम है, में अन्तर है**। तो प्रेमवश ईसा ने उस वेश्या का पक्ष लिया। निःसन्देह वे सत्य की जड़ों में खड़े थे परन्तु उनके हृदय से प्रेम प्रवाहित हो रहा था– पवित्र प्रेम। अतः किसी के लिए जब हमारे अन्दर पवित्र प्रेम होता है तो हम चीज़ों को अलग ढंग से देखते हैं। किसी व्यक्ति को हम अलग ढंग से देखते हैं और यह बहुत मधुर हो जाता है, अन्यथा सत्य तो बहुत कड़वा तथा कष्टदायी हो सकता है। परन्तु **प्रेम से अलंकृत सत्य बिना कांटों के फूल सम है**। प्रेम से सराबोर व्यक्ति का सत्य पर खड़े होना अत्यन्त दिलचस्प बात है। आपको भी इसी प्रकार का व्यक्तित्व बनना होगा।

अब प्रेम की अभिव्यक्ति को समझने के लिए हम एक उदाहरण ले सकते हैं। मान लो मैं किसी से मिलती हूँ और वह किसी अन्य व्यक्ति के विषय में सभी प्रकार की भली बुरी बातें बता रहा है तो मेरे हृदय में उस व्यक्ति के लिए तथा वे बातें बताने वाले के लिए तीव्र प्रेम उमड़ता है। तो मैं झूठ का सहारा लेती हूँ, पूर्ण झूठ का, जो कि एक प्रकार से सत्य भी है। उस व्यक्ति से मैं कहती हूँ कि देखो तुम क्या बाते कर रहे हो ? जिस व्यक्ति के विषय में तुम यह सब बता रहे हो वह तो सदा तुम्हारी प्रशंसा करता रहता है और तुम इस तरह की बातें कर रहे हो! अब वास्तव में यह सत्य नहीं है परन्तु आप झूठ का सहारा लेते हैं, सत्य के दूसरे पहलू का ताकि उन दोनों व्यक्तियों में आप मित्रता करवा सकें। तो प्रेम का यही कार्य है कि यह लोगों को परस्पर समीप लाने का प्रयत्न करता है, ऐसी बातें कहता है कि लोग परस्पर एक हो जाएं, उनमें एकता आ जाए। अतः जो भी युक्ति संगत विधियाँ हमने अपनाई हैं वे लुप्त हो जाती हैं और हम समझने का प्रयत्न करते हैं कि लोगों के हृदय मिलाने के कौन से तरीके हैं।

अब आप सामूहिक चेतना में हैं। यह सामूहिक चेतना यदि बाह्य है तो भी आप बहुत सी उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं जैसे आप सुन्दर आश्रम बना सकते हैं आदि। परन्तु यदि सामूहिक चेतना प्रेम से परिपूर्ण हो तब इसका आनन्द भी सम्पूर्ण होता है। लोग शान्ति की बातें करते हैं इस नवीन चेतनता, जिसे हम सामूहिक चेतना कहते हैं, के बिना शान्ति नहीं प्राप्त की जा सकती। परन्तु सामूहिक चेतना में भी प्रेम तत्व का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ जर्मनी और आस्ट्रिया के सहजयोगी अब इज़राइल जा रहे हैं। यह बहुत ही सन्तोषदायक है। इज़राइल के लोगों को इस पूजा के लिए आते देख मैं प्रसन्न हुई और तभी मुझे पता लगा कि मुसलमानों द्वारा उन पर किए गए अत्याचारों को

भुलाकर वे मिश्र आ रहे हैं। अपने साथी लोगों, अन्य सहजयोगियों के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति करने का आकर्षण वास्तव में प्रशंसनीय है और एक बार जब यह प्रवाहित होने लगता है तो आप हैरान रह जाएगें, किस प्रकार हम विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं।

अधिकतर समस्याएं, मानवीय समस्याएं, घृणा के कारण है। 'मैं घृणा करता हूँ' का उपयोग आम बात है। यह मूर्खतापूर्ण है। किसी से घृणा करना अपराध है। आप क्यों किसी से घृणा करते हैं ? आप अपराध से घृणा कर सकते हैं, बुराई से घृणा कर सकते हैं परन्तु मात्र घृणा के लिए लोगों से घृणा नहीं कर सकते। हममें यह जो घृणा है यही हमारी समस्याओं के लिए जिम्मेवार है। लोगों में फूट डालकर एक व्यक्ति बहुत शक्तिशाली हो जाता है और फूट डालने वाली इन्हीं प्रवृत्तियों ने बहुत से देशों को कुचल डाला। उदाहरणार्थ : अंग्रेज़ों ने हमारे देश का विभाजन किया, अब उन्हें विभाजन का सामना करना पड़ रहा है। इसका कोई अन्त नहीं है। हमारा विभाजन होने से क्या हुआ ? भारत से अलग हुए देश बहुत कष्ट उठा रहे हैं। देश का विभाजन करने वाले लोग सोचते हैं कि वे प्रधानमंत्री बन जाएंगे आदि। उनमें से अधिकतर की उन्हीं के लोगों ने हत्या कर दी। आप स्पष्ट देख सकते हैं कि किस प्रकार घृणा की अभिव्यक्ति होती है। एक छोटे से बिन्दु से इसकी शुरुआत होती है और सर्वत्र इसकी अभिव्यक्ति होती है। विभाजित होने वाले किसी भी देश में यह देखा जा सकता है। किसी भी देश का विभाजन करने की कोई आवश्यकता नहीं। विभाजन अधिक घृणा तथा कष्टों की सृष्टि करता है।

इसी प्रकार सहजयोग में भी हमें विभाजन के विषय में कभी नहीं सोचना चाहिए। अब, आपने सुना होगा, गंगा के समीप सुन्दर जमीन ले ली है। लेकिन लोग सोच रहे हैं कि क्या वे अपने–अपने घर तथा अपने–अपने सहन बना सकते हैं। क्यों ? आप सामूहिकता में रहना जानते हैं। सामूहिक जीवन का आप आनन्द लेते हैं। तो क्यों आपको अलग–अलग घर चाहिएं ? हमने एक–दूसरे से क्या छुपाना है ? आखिरकार जो भी कुछ हम करते हैं उसका पता चैतन्य लहरियों पर चल जाता है। आप कुछ छुपा नहीं सकते। तो अलग–अलग घरों की क्या आवश्यकता है? आप गोपनीयता क्यों चाहते हैं ? सहजयोग में क्योंकि कुछ भी गोपनीय नहीं है, हम सबके विषय में जानते हैं कि वे क्या करना चाहते हैं, उनकी समस्याएं क्या हैं, उनके कौन से चक्र पकड़ रहे हैं, क्या ऐसा नहीं है? तो सहजयोग में किसी प्रकार का कोई रहस्य नहीं है। हर आदमी हर दूसरे के विषय में जानता है। अतः मेरी समझ में नहीं आता कि एकान्तवास का क्या लाभ है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि अभी तक मस्तिष्क इस ओर कार्य कर रहा है।

फिर लोग उत्तराधिकार के विषय में सोच रहे हैं। मैं कह रही थी कि ठीक है आप लोग उत्तराधिकार बना लें परन्तु यदि आपका पुत्र सहजयोगी नहीं है तो आप क्या करेंगे? आप किसी अपराधी को तो वारिस नहीं बना सकते क्योंकि वह तो सबको कष्ट देगा। नियम कानून आपको प्रसन्न तथा सामूहिक नहीं रख सकते है। परन्तु पवित्र सामूहिक चेतना और इससे निकला प्रेम यह कार्य कर सकता है। आप जानते हैं कि हमारे यहाँ न तो कोई कायदे का संगठन है, कोई पादरी बना नहीं, इस प्रकार का हमारे यहाँ कुछ भी नहीं। **अगुआ गणों का भी परिवर्तन इतना अधिक किया जा सकता है कि शायद गंगा नदी भी अपना मार्ग इतना परिवर्तित नहीं करती**। तो इस

प्रकार का कुछ भी नहीं है। सदैव हम एक परिवर्तनीय तट पर खड़े हैं और आपकी माँ सदा भिन्न किस्मों की चालाकियाँ करती रहती हैं। इसका कारण यह है कि मैं चाहती हूँ कि आप चट्टान पर खड़े हों और इस चट्टान से प्रेम प्रवाहित हो, इससे ऐसा दिव्य प्रेम बह निकले जिसका आनन्द वास्तव में बहुत सुन्दर होता है। उदाहरणार्थ : लोगों को अलग स्नानागार चाहिएं, विशेषकर भारतीयों को। अचानक भारतीय अंग्रेज बन गए और अंग्रेज भारतीय। मेरी समझ में नहीं आता कि भारतीयों को यह बीमारी क्यों है ? यह बीमारी अन्य लोगों तक भी फैल रही है। सामूहिक जीवन में इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हमें इसका पता ही नहीं होता। आप यदि मुझसे पूछें तो मुझे पता ही नहीं होता कि मैं स्नान गृह में गई भी हूँ या नहीं। वहाँ गए और वापस आ गए, बस। इन सब चीज़ों के लिए मेरे पास समय नहीं है। इसी प्रकार आपके पास भी एक ऐसे समाज की धारणा होनी चाहिए जो समुद्र की तरह रहता है। समुद्र यदि उठता है तो वे उठें और समुद्र यदि गिरता है तो वे गिरें। बस प्रेम की एकस्वरता। हिमालय की वादियों में मैं एक ऐसे समाज की आशा कर रही हूँ और मुझे विश्वास है आप सब इस बात को महसूस करेगें कि क्यों हिमालय विश्व का सहस्रार है। सौभाग्यवश इस कार्य को मैं सहस्रार पूजा से पूर्व करना चाहती थी और, मैं कहूँगी, हिमालय की कृपा से यह हो गया। हिमालय सहस्रार सम है जिसमें कुण्डलिनी उठ चुकी है और चैतन्य लहरियाँ जिससे बाहर आ रही हैं। आकाश में आप इन चैतन्य लहरियों को देख सकते हैं।

परन्तु हिमालय पर शिव नामक एक क्रोधी देवता का शासन है। इसकी यह भयानक बात है। अतः हमें बहुत अधिक सावधान होना होगा। यदि हम खिलवाड़ करेंगे, परस्पर यदि हम घृणा भाव रखेंगे, विभाजित करने वाली विधियाँ अपनाएंगे, किसी असहज चीज़ को अपनाएंगे तो यह क्रोधी देवता हमारे सिर पर बैठा हुआ है। मक्का में भी शिव मक्केश्वर के रूप में बैठे हुए हैं। आप यदि दुराचरण करेंगे तो इनका क्रोध प्रकट होगा। जहाँ भी हो, आप सावधान रहें कि यह शिव सर्वत्र विद्यमान है।

एक शिवलिंग अलातू, महाराष्ट्र में, परलीपैताल में है। वहाँ पर लोगों ने एक अन्य प्रकार का सहजयोग शुरु कर लिया था। वे लोग गणेश विसर्जन के दिन शराब पी रहे थे। शिवलिंग का प्रकोप आया और यहाँ एक भयानक भूकम्प आ गया। इसमें बहुत से लोग मारे गए परन्तु किसी भी सहजयोगी को कुछ नहीं हुआ। उनके ध्यान केन्द्र भी पूरी तरह से बच गए। पिछली बार (गणपति पुले में) आप जानते हैं, एक भयानक आग लगी परन्तु आप लोगों को कोई भी हानि नहीं पहुँची। आप सुरक्षा में हैं, हर समय सुरक्षित हैं। शिव का वहाँ कोई प्रकोप न था। आग आपको कोई हानि नहीं पहुँचा सकी क्योंकि आप सुरक्षा में थे। यह सुरक्षा आपकी माँ का प्रेम है, इसके अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं। केवल आपकी माँ का प्रेम है जोकि अत्यन्त शक्तिशाली है और आपकी सुरक्षा कर रहा है, आपकी सहायता कर रहा है। इसी प्रकार आप भी अपने अन्दर अन्य लोगों के लिए ऐसा ही प्रेम विकसित करें, अन्य सहजयोगियों के लिए, अन्य लोगों के लिए, अन्य चीजों के लिए, पृथ्वी माँ के लिए, हर चीज़ के लिए। आपका प्रेम न केवल आप ही की रक्षा कर सकता है परन्तु अन्य लोगों की भी रक्षा कर सकता है। आपका चित जब तक आप ही पर है तो आप क्षुद्रतर होते चले जाएंगे। मुझे यह मिलना चाहिए, मुझे वह मिल जाना चाहिए। मैं यह

पसन्द करता हूँ, मुझे वह पसन्द है। ये सब बातें समाप्त हो जाएंगी। आप कभी नहीं कहेंगे कि मुझे यह पसन्द है, ऐसा कहने का कोई प्रश्न ही नहीं। मुझे क्या पसन्द है ? यह निर्णय करना मेरे लिए कठिन है कि मुझे कौन सी चीज़ पसन्द है। मुझे यह पसन्द है, वो पसन्द है। मैं इस प्रकार होना पसन्द करता हूँ। आप हैं कौन ? स्वयं से प्रश्न पूछें कि आप हैं कौन ? यदि आप पवित्र आत्मा हैं तो यह प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। और प्रेम में आप दूसरों के विषय में सोचते हैं दूसरों की समस्याओं के विषय में सोचते हैं अन्य लोगों को आप सुखी बनाना चाहते हैं। आप अन्य लोगों की देखभाल करने का प्रयत्न करते हैं। केवल स्वयं को ही नहीं देखते, न ही केवल अपनी चिन्ता करते हैं। यही अवस्था आपने प्राप्त करनी है। चाहे आप जितने भी धार्मिक हों, जिस प्रकार भी सहज हों परन्तु जब तक अपने सहस्रार में आप यह स्थिति नहीं पा लेते, मैं नहीं कहूँगी कि आप ठीक हैं। आपको इसे पाना होगा। इसके लिए, निश्चित रूप से, ध्यान–धारणा अत्यन्त आवश्यक है।

इस कार्य में आपका मस्तिष्क बाधा बनता है, यही हर समय आपको बताता रहता है। मस्तिष्क पर नज़र रखें, किस प्रकार यह आपका मार्गदर्शन करता है, किस प्रकार यह आपको बताने का प्रयत्न करता है कि अब मेरा, मेरे घर का, मेरे बच्चों का, मेरे देश का, क्या होगा। आप मेरा, मेरा, मेरा करते रह जाते हैं। अन्ततः बिना कुछ प्राप्त किए आपका अन्त हो जाता है। परन्तु जब आप तू, तू, तू कहते हैं, कबीर जी ने इसके विषय में एक बहुत सुन्दर चीज़ लिखी है, उन्होंने कहा कि बकरी जब जीवित होती है तो "मैं , मैं" करती है। परन्तु मरने के पश्चात् उसकी अंतड़ियों को निकाल कर जब कपास धुनने वाली धुनकी पर लगा दिया जाता है तो धुनकी में से आवाज आती है– "तूही, तूही, तूही" अर्थात् आप ही हैं, आप ही हैं, आप ही हैं। और यह धुन चहुँ ओर फैलती है। इसी प्रकार आपको भी अन्य लोगों के दृष्टिकोण से सोचना चाहिए।

सर्वप्रथम जब आप "तूही" करते हैं तो अपने गुरु या परमात्मा से कहते हैं कि 'आप ही हैं', मुझमें अब कुछ नहीं बचा, मेरा विलय हो गया है, विलय होकर मैं प्रेम के सागर से एक हो गया हूँ। तब आप अन्य लोगों को कहते हैं– तूही, तूही। यही सहज संस्कृति है।

तो बहुत सा असत्य समाप्त हो जाएगा। वह असत्य जिसने आपको तथा अन्य लोगों को घेरा हुआ है। जैसे लोग मुँह पर तो बड़े प्रेम से कहते हैं कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ परन्तु पीठ पीछे आपका अहित करने की चेष्टा करते हैं। वे कुछ भी कर सकते हैं। परन्तु सहजयोगी ऐसा नहीं कर सकते। मैं कहूँगी कि सहजयोगी उस स्थिति पर पहुँच गए हैं जहाँ वे ऐसा नहीं कर सकते, कम से कम इसके विषय में चेतन तो हैं कि हमें ऐसा नहीं करना। हम शराब नहीं पीते, तो क्या हुआ। खाने के विषय में हम हंगामा नहीं करते। मेरा कहने से अभिप्राय यह है कि उन्होंने यह सब प्राप्त कर लिया है। इस पर उन्हें बहुत गर्व है क्योंकि आप पवित्र आत्मा हैं। इसलिए आप ऐसे बन गए। जो आप हैं उस पर आपको गर्व कैसे हो सकता है ? उदाहरणार्थ किसी ने मुझ से पूछा कि आप को इस बात पर गर्व नहीं है कि आप आदिशक्ति हैं ? उसका यह प्रश्न मुझे समझ नहीं आया। मैंने कहा देखो यदि मैं आदिशक्ति हूँ तो इसमें गर्वित होने वाली कौन सी बात है क्योंकि मैं तो वह हूँ। यदि मैं वह स्थिति प्राप्त करती तब मैं इस पर गर्वित होती। आप मानव हैं, मानव रूप में आपका जन्म हुआ। तो क्या आपको इस पर गर्व है? आपको इस पर गर्व नहीं है। इसके प्रति

आप चेतन नहीं हैं। मैं कभी स्वयं से नहीं कहती कि मैं आदिशक्ति हूँ। ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं। परमात्मा ने मुझे आदिशक्ति होने के लिए चुना है। परन्तु लोग समझते हैं कि परमात्मा ने उन्हें सहजयोग का वरदान ऐसे दिया है मानो जागीरदार बना दिया हो। आपको सहजयोगी बनना है। और फिर समझना है आप सहजयोगी हैं। जैसे मान लो एक पत्थर सोना बन जाता है, तो वह सोना है। उसे इसका गर्व नहीं होगा कि वह सोना है। सोना तो सोना है, इस पर गर्व कैसा। इसी प्रकार सहजयोगी होने की चेतना समाप्त हो जाती है। परन्तु ये अभी तक भी बनी हुई है। अतः व्यक्ति को सावधान रहना है कि एक बार यदि आप सहजयोगी बन गए तो सहजयोगी हैं। मैं एक सहजयोगी हूँ। तो क्या हुआ, कौन सी बड़ी बात है। ये तो ऐसे ही कहना हुआ कि मेरी एक नाक है और नाक पर मुझे गर्व है। परन्तु इसमें गर्व की कौन सी बात है। यह मिथ्या गर्व समाप्त होना चाहिए। यह महसूस करना बहुत महत्वपूर्ण है कि मेरे अकेले का कोई अस्तित्व नहीं। मैं विराट का अंग प्रत्यंग हूँ, (मेरी) बूंद अब सागर बन गई है। मैं नहीं समझ पाती कि अभी तक भी आपमें कुछ सीमांए बाकी हैं। इस प्रकार की चेतना आपमें तभी विकसित होती है जब आप प्रेम से परिपूर्ण हो जाते हैं, केवल प्रेम से, और प्रेम आपसे फूट पड़ता है। और प्रेमानन्द में मस्त आप अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते चले जाते हैं चाहे आप बोलें या मौन रहें, इसके विषय में कुछ कहें या न कहें, मुस्करायें या न मुस्करायें, यह आनन्द आपके हृदय में विद्यमान होता है।

अब हृदय चक्र। हृदय चक्र की पीठ सत्य के प्रकाश से भर जाती है। परन्तु वह सत्य वैसा नहीं है जैसा सत्य के विषय में हम जानते हैं। किसी ने मुझसे पूछा कि सत्य क्या है ? मैंने कहा कि बहुत समय पहले लिखा गया था कि हमें सत्य बोलना चाहिए, ऐसा सत्य जो लोगों को अच्छा लगे 'सत्यम् वदेत् प्रियम् वदेत्'। तो लोगों ने पूछा ऐसा सत्य जिसमें ये दोनों चीज़ें हो हमें कैसे मिल सकता है ? हो सकता है कि सत्य भेंट करने योग्य न हो, या ऐसा हो जिसे लोग पसन्द करें। तो इन दोनों गुणों का मिश्रण किस प्रकार किया जाए? कृष्ण जी ने इसका एक बहुत सुन्दर उत्तर दिया। उन्होंने कहा 'सत्यम् वदेत् हितम् वदेत्, प्रियम वदेत्। आप सत्य कहें परन्तु वह सत्य अच्छा हो, इसे पसन्द किया जा सके, यह आपकी आत्मा को पोषण दे सके, इससे हित हो और यह 'प्रिय' भी हो। हो सकता है आरम्भ में लोग इसे पसन्द न करें परन्तु अन्त में वे कहेंगे कि देखो यह बात इतनी अच्छी है और मुझे कही गई है। परन्तु किसी भी हालात में कोई भी कठोर बात नहीं कही जानी चाहिए। सभी लोगों को सुधारते फिरना आपका कार्य नहीं है। आरम्भ में मैंने देखा कि सहजयोगी कहा करते थे, आपका यह चक्र पकड़ रहा है। आपका वह चक्र पकड़ रहा है। ये सब अहम् का खेल है। किसी का तिरस्कार करना आपका कार्य नहीं। आप स्वयं ही एक अत्यन्त पवित्रावस्था से आए हैं। अब आप अन्य लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं? यदि आप सहजयोग में योग्य हैं आपको इसका पूर्ण ज्ञान है, आप अच्छी तरह से परिपक्व हैं, तब आप इसे प्रेम की चुनौती के रूप में ले सकते हैं। परन्तु किसी के दोष खोजते हुए उसे तिरस्कृत नहीं कर सकते। आप अगर ऐसा न करना चाहें तो इसके लिए बहुत बड़ा बहाना है। कोई डाक्टर यदि रोगी का इलाज करना न जानता हो तो वह कहेगा कि तुम इसलिए बीमार पड़े क्योंकि तुम ठंड में चले गए। अरे बाबा ठीक है, परन्तु अब तो मैं बीमार हूँ। अब मेरे इलाज के बारे में आप क्या कहते हैं ? नहीं तुमने ऐसा

किया, तुमने वैसा किया, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। वह बीती हुई गलतियों के बारे में ही बातें करता रहता है। **इसी तरह से हम भी लोगों को कहे चले जाते हैं कि तुमने यह गलती की, वो गलती की, फलां गुरु के पास गए, इसलिए आप ऐसे हो गए। ऐसा न करें किसी के साथ ऐसा न करें। कार्य करें और सब ठीक हो जाएगा।** निःसन्देह आप पूछ सकते हैं कि क्या आप किसी गुरु के पास गए थे ? परन्तु न तो उसका तिरस्कार करें और न ही आलोचना। लोगों की गलतियों के लिए उनका तिरस्कार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसका कारण केवल आपका एहसास (चेतना) है कि आप कहीं अच्छे हैं और आपको कहीं अधिक ज्ञान है। निःसन्देह आप बहुत ज्ञानी हैं। आप जिज्ञासु (Gnostics) हैं। मैं स्वीकार करती हूँ **परन्तु जब तक आपको इसका एहसास है, आप ज्ञानी नहीं हैं। एक बार जब आपमें इसका एहसास समाप्त हो जाएगा तब आप सहजयोगी बन जाएंगे। यह विकास मैं आप सभी के सहस्रार में चाहूँगी।**

हमें पूरे विश्व के विषय में सोचना है। आप केवल सहजयोगियों तथा साधकों के विषय में ही नहीं सोच सकते। साधक तो हैं, परन्तु बाकी लोगों का क्या होगा ? बहुत सी समस्याएं हैं। बहुत से कार्य होने बाकी हैं। उदाहरणार्थ भारत में गरीबी की समस्या है। मैं उनके लिए कुछ करने का प्रयत्न कर रही हूँ। आपके अपने देश में समस्याएं हैं उन समस्याओं को खोज निकालिए। उनके लिए आप एक प्रकार का आन्दोलन चला सकते हैं और जहाँ तक हो सके उनकी सहायता कर सकते हैं। मिशनरियों (धर्म प्रचारकों) की तरह आपको किसी का धर्म परिवर्तन नहीं करना और न ही किसी इनाम या यश के लिए ऐसा करना है। ऐसा आप केवल अपने आनन्द के लिए करें। इस प्रकार जब आप समाज में जाएंगे तो आपको पकड़ जाने का डर है कि कहीं हमारा अहम् वापिस न आ जाए। वे अपने आप से डरते हैं। तो ये सब समस्याएं छोड़ दी जानी चाहिएं और आपको उस अवस्था तक पहुँचना चाहिए जहाँ आपको कोई भय न हो और जहाँ आपमें अपने विषय में ये मूर्खतापूर्ण विचार न हों। आपमें शक्तियाँ हैं, आप शक्तिशाली हैं, इतना ही नहीं आपको ये शक्तियाँ विशेष रूप से दी गई हैं। आप यदि इनका उपयोग नहीं करना चाहते तो क्या करेंगे ? **दीपक यदि जलाया नहीं गया तो इसका क्या लाभ है ? यह केवल सजाने के लिए है। तो इन शक्तियों का उपयोग होना चाहिए और वह भी बिना इस बात के एहसास के कि आप कोई महान हैं, अन्य लोगों से बेहतर हैं या आपको विशेष रूप से चुना गया है।** तब सहजयोग गरिमा तथा सूझ–बूझपूर्वक बहुत तीव्रता से चल सकता है।

यह ठीक है कि सभी प्रकार के उल्टे सीधे लोग हैं। आप जानते हैं कि वे मूर्ख हैं। बस उन पर हँसे, उनका मजाक करें और इस प्रकार आप समस्याएं सुलझा सकेंगे। परन्तु यह सब भी आपने इस प्रकार करना है कि उन्हें चोट न पहुँचे। जो कुछ भी आप करें परिणाम से उसे आंके। परिणाम ऐसे होने चाहिएं कि आप जान सकें कि किस प्रकार यह कार्यान्वित हो रहा है। कुछ लोगों में यह विवेक होता है। मेरे विचार में बात को भली भांति पाने और कार्यान्वित करने का ज्ञान उच्चकोटि का विवेक है। प्रेम, यह दैवी प्रेम आपको स्वयं पर पूर्ण नियन्त्रण प्रदान करता है और आप जान जाते हैं कि लोगों से किस प्रकार आचरण करें, उनसे किस प्रकार बातचीत करें और किस प्रकार उनका संचालन करें।

मैं नहीं जानती कि मानव का सबसे बड़ा दोष

कौन सा है। श्री कृष्ण के अनुसार क्रोध सबसे बड़ा दोष है। **परन्तु मेरे अनुसार यह दोष ईर्ष्या है।** किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, मेरे विचार में, फंफूद की तरह से है। सहजयोग में भी लोगों में ईर्ष्या है। जिसके कारण वे समस्याएं खड़ी कर सकते हैं। वे परस्पर समस्याएं उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। अतः आपको अपने अन्दर देखना है कि क्या मुझमें किसी प्रकार की ईर्ष्या है? कभी–कभी तो मुझे इसकी चिन्ता होती है। मान लो मैं किसी को कुछ उपहार देना चाहती हूँ। ऐसे अवसर पर मुझे चिन्ता होती है कि इस प्रकार कहीं मैं ईर्ष्या की सृष्टि तो नहीं कर रहीं? ऐसा सोचना चाहिए कि संभवतः श्री माताजी भूल गई होंगी या चीज़ें कम होंगी। बस। परन्तु सहजयोग में लोगों में तीव्र ईर्ष्या भाव है। अब मान लो मैं किसी से मिलती हूँ और किसी से नहीं मिलती हूँ। समाप्त। परन्तु जिससे मैं मिलती हूँ उसके प्रति ईर्ष्या विकसित हो जाती है। कई बार लोगों ने मुझ पर बहुत दबाव डाला कि श्री माता जी मैं आपसे अवश्य मिलूंगा। मैं नहीं समझ पाती क्यों ? मैं सर्वव्यापक हूँ। तो मुझसे मिलने की और बातचीत करने की क्या आवश्यकता है ? क्या आवश्यकता है ? केवल आप ही के लिए तो मैं नहीं हूँ। मैं सबके लिए हूँ। परन्तु कुछ लोग सोचते हैं कि मुझ पर उनका विशेष अधिकार है और मुझे अवश्य उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहिए, अन्यथा उन्हें बुरा लगता है। जैसा कि मैंने कहा, जब आप समुद्र बन जाते हैं तो यह सब चीज़ें एकदम छुट जानी चाहिएं। तब आपको यह चिन्ता नहीं होती कि आप कौन से तट पर गए, आपने कहाँ यात्रा की। आप तो केवल समुद्र की लहरों के साथ ऊपर नीचे उठते रहते हैं। इस प्रकार यह प्रेम का जीवन्त सागर है और हमें बिना किसी प्रदर्शन के, बिना अन्य लोगों पर प्रभुत्व जमाए यह चीज़ अपने अन्दर विकसित करनी है। यही सबकुछ होना चाहिए। हिन्दी में इसे बहुत सुन्दर रूप से कहा गया है, " अपने में समाए हुए " आपके अन्दर ऐसा ही होना चाहिए। यही सबसे बड़ा आनन्द है। आप जानते हैं कि हमें किसी चीज़ की आवश्यकता है। मान लो मुझे अपने लिए कुछ चाहिए तो मैं संघर्ष करके इसे प्राप्त कर लेती हूँ। परन्तु यही चीज़ यदि आपके अन्दर है तो आप इससे अपने को पूरी तरह से भर लेते हैं।

तो क्या चीज़ सबसे अधिक महत्वपूर्ण है ? किस चीज़ की इतनी अधिक आवश्यकता है ? किसी चीज़ की नहीं। आप पूर्णतः स्वयं से परिपूर्ण हैं, अपने अन्दर सन्तुष्ट हैं और तब आप इस आनन्द को बाँटना चाहते हैं। सहस्रार से निपटने का यह आदर्श उपाय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि लोग आएंगे। इस पूरे संसार का सहस्रार खोलना होगा। यह कार्य हमें करना है। एकान्त स्थानों पर जाकर हमें लुप्त नहीं हो जाना है। **आप वहाँ ध्यान धारणा करने के लिए जा सकते हैं, संसार से पलायन करने के लिए नहीं। अपने उत्थान के लिए, ध्यान धारणा करने हेतु, ऐसे स्थान बहुत अच्छे होंगे।**

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि आप कितने बहुमूल्य हैं और कितने महत्वपूर्ण। आप इस समय अवतरित हुए, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया, किसलिए ? विश्व को मुक्त करने के लिए, मानव का परिवर्तन करने के लिए, पूरे विश्व को परमात्मा के साम्राज्य में लाने के लिए। आप इसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए यहाँ पर हैं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

(अनुवादित)

जन्मदिवस पूजा

दिल्ली –21–3–1997

परम् पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(अंग्रेजी से अनुवादित)

अभी तक मैं भारतीय सहजयोगियों के लिए बोल रही थी। मेरा जन्मोत्सव मनाने के लिए आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद। आपने अत्यन्त सुन्दर गुब्बारे लगाए हैं। इनको देखते हुए हम पाते हैं कि इनमे से बहुत से गुब्बारों की हवा निकल गई है। पश्चिमी देशों में ये एक समस्या है जो हमारे सामने खड़ी है। क्योंकि पश्चिमी संस्कृति के अनुसार अहं का होना भी महान उपलब्धि है और अहंग्रस्त जब हम होते हैं तो, मैं जानती हूँ, व्यक्ति कैसा लगता है। जब वह अपने विषय में बात करता है, अपना गुणगान करता है तो वह अत्यन्त मूर्ख प्रतीत होता है। आपकी समझ में नहीं आता कि किस ओर देखें, क्योंकि उसकी मूर्खता पर हँसने को आपका मन करता है। अहं मूर्खता की ही देन है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ, अहं के लिए कौन सी उपमा दूं, क्योंकि यह गुब्बारा तो बस फूला हुआ है और आपको भी हवा में उड़ाता है। परन्तु जब यह फटता है तो आप धड़ाम से पृथ्वी पर गिरते हैं। एक सहजयोगी की तरह पृथ्वी पर नहीं आते, बिल्कुल समाप्त हो जाते हैं। आपका सारा घमण्ड व्यर्थ हो जाता है। **आपकी खोपड़ी यदि घमण्ड से परिपूर्ण है तो आप कभी सहजयोग को नहीं समझ सकते।** अहंग्रस्त लोगों को मैं जानती हूँ, वे सहजयोग में आए और अब भी वे सोचना चाहते हैं कि वे अन्य लोगों से कहीं अधिक जानते हैं। **आत्मा के विषय में जानने के लिए आपको गहनता में उतरना होगा और गहनता में उतरने के लिए वे सब विचार त्यागने होंगे जो आपको हवा में उड़ाते हैं।** कल्पना करें कि एक बहुत बड़ा गुब्बारा आपके साथ बंधा हुआ है, तो आप समुद्र की गहनता में किस प्रकार उतर सकते हैं ? नहीं उतर सकते। इस प्रकार का अहं आपको हवा में उड़ा देता है, पूर्ण मूर्खता के क्षेत्र में। अंग्रेजी भाषा में शब्द (Stupidity) सारा अर्थ बता देता है। तब आप स्वयं को अनन्त मान बैठते हैं और मनमाने ढंग से आचरण करते हैं। परन्तु ऐसा करके आपको मिलता क्या है ? इससे आपको कुछ नहीं प्राप्त होता। आपकी उपलब्धियों के कारण लोग आपसे ईर्ष्या करते हैं, आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, आपका कोई मित्र नहीं बनता, कोई आपकी चिन्ता नहीं करता। सहजयोग में लोग जानते हैं कि किस व्यक्ति को अहं की समस्या है। ऐसे व्यक्ति के विषय में बातें करते हुए मैंने कुछ लोगों को सुना है, वे कहते हैं, हाँ हम उसे जानते हैं, भली–भांति जानते हैं।

बहुत समय पूर्व एक बार पुणे में मुझे एक अनुभव हुआ। सभागार के मालिकों ने वहाँ कार्यक्रम

की आज्ञा देने से इन्कार कर दिया क्योंकि श्री माता जी ब्राह्मण नहीं हैं। तो सहजयोगियों ने कहा कि ठीक है हम अखबारों में छपवा देते हैं कि क्योंकि श्री माता जी ब्राह्मण नहीं हैं हम उनका कार्यक्रम करने में असमर्थ हैं। घबराकर वे मान गए और मेरे कार्यक्रम में आए। सभागार का मालिक ऊपर गैलरी में बैठा हुआ था उसे कोई अजीब रोग था जिसके कारण वह चल भी नहीं पाता था। सहजयोगियों ने एकदम प्रोग्राम आरंभ किया, इन्होंने मुझे बताया भी न था कि सभागार के मालिकों ने कार्यक्रम का विरोध किया था। मेरे सामने बैठते ही ये मालिक थर–थर काँपने लगे। ओह माँ! मैंने कहा, ये सब क्या है ? वे कहने लगे कि हमने कुछ नहीं किया, हमने तो केवल इतना कहा था कि ये ब्राह्मणों का बाड़ा है और क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकतर ब्राह्मण रहते हैं इसलिए आप यहाँ अपना कार्यक्रम नहीं कर सकते। मैंने कहा सच, इतना ही कहा आपने ? हाँ इतना ही। वे कहने लगे कि उधर देखें, आपकी शक्ति से वे लोग भी काँप रहे हैं। मैंने उन लोगों से पूछा कि वे कौन हैं। क्या आप भी ब्राह्मण हैं ? वे कहने लगे नहीं, हम ठाणे से आए प्रमाणित पागल हैं। मैंने कहा कि आप यहाँ कैसे आ गए ? वे कहने लगे कि एक पागल व्यक्ति को आपने ठीक कर दिया था अतः हमारा सुपरिटेण्डेन्ट हमें यहाँ ले आया है, हम प्रमाणित पागल हैं। इन लोगों ने मेरी ओर देखा। मैंने कहा अब आप मुकाबला करें, आप भी काँप रहे हैं और वे भी कांप रहे हैं; अब देखें कि आपकी स्थिति क्या है! वे सब सहजयोगी बन गए। इतना ही नहीं ऊपर बैठे महाशय को मैंने आने को कहा। वह नीचे आया और उस दिन से अपना जीवन मुझे समर्पित कर दिया। उसने पुणे में बहुत सा काम भी किया। तो मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि **जो भी व्यक्ति इस प्रकार की बात करता है कि सहजयोग में यह गलती है, ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें इतने पैसे नहीं देने चाहिए थे, यह अगुआ अच्छा नहीं है आदि, तो ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि एक पतला कागज अपने हाथ पर रखकर हाथ मेरे फोटोग्राफ की तरफ फैला ले। यदि हाथ के कँपन को आप रोक सकें तो आप ठीक हैं। आप सब इसे आज़मा सकते हैं, दोनों हाथों पर कागज रखकर आप इसे आजमायें। यदि दाएं हाथ पर कागज में कंपन है तो इसका अर्थ है कि श्रीमान अहं काँप रहे हैं और आप जानते हैं कि आपने सहजयोग में इसका इलाज किस प्रकार करना है। मोहम्मद साहब का धन्यवाद कि उन्होंने इसका इलाज करने कि विधि हमें बताई।**

हमारे अन्दर दो समस्याएं हैं, एक तो हमारे बंधन हैं और दूसरा हमारा अहं और अपने मन की सृष्टि हम इन्हीं दोनों से करते हैं, और इन्हीं दोनों के प्रभाव में हम खेलते हैं। अब आपको सावधान होना है। **पहले अपने बाएं हाथ से देखें यदि बायें हाथ का कागज कांप रहा है तो आप बंधनग्रस्त हैं और यदि दायां हाथ कांप रहा है तो आप अहंकारी हैं। अब इनका इलाज करें, इन दोनों बाधाओं का इलाज करें। मेरे सम्मुख आपको चैतन्य लहरियाँ आएंगी क्योंकि**

मैं आपकी माँ हूँ। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आप ठीक हैं। आप मेरे फोटों के सम्मुख आजमाएं, फोटो अधिक शक्तिशाली है।

माँ होने के कारण मैं चहुँ ओर लीला करती हूँ, पर ये नहीं जानती कि मुझे क्या कहना चाहिए। हो सकता है मेरे सम्मुख बैठकर आप महसूस न कर सकें। फोटो के सामने बैठकर अपने दायें और बायें हाथ पर बारीक पेपर रखें। एक–एक हाथ आगे करके आजमाएं और स्वयं को परखें कि आप क्या हैं। आखिरकार आप सहजयोग में मेरा उद्धार करने के लिए नहीं आए। स्वयं को विकसित करने आए हैं और इसलिए आपको अपना सामना करना होगा और स्वयं देखना होगा कि आपके अन्दर क्या है जो इतना शक्तिशाली हैं, कष्टदायी है और आपको पतन और विनाश की ओर ले जा रहा है।

सहजयोग आनन्द के सागर के सिवाय कुछ भी नहीं है। मैंने सोचा था कि मेरी गैर हाजिरी में भी आप सब आनन्द ले रहे होंगे। ये ठीक भी है, आप आनन्द लेते हैं। कई बार मैने देखा है, हवाई अड्डे पर जब मेरा जहाज देर से पहुँचता है, पाँच घंटे, चार घंटे–तो भी प्रायः सभी लोग अत्यन्त तरोताजा होते हैं। मैंने पूछा क्या हुआ ? श्री माता जी हम सारी रात आनन्द लेते रहे। तो **आप जिस चीज़ का आनन्द लेते हैं वह है सामूहिकता।** अर्थहीन सीमाओं, जो आपने बनाई हैं, से मुक्त होकर आपको सामूहिकता का आनन्द लेना चाहिए। तब आप आनन्द को देखें। हर समय आप आनन्द में तैरते रहेंगे। लोगों में एक प्रकार का विवेक है जो आत्मसाक्षात्कार से पूर्व नहीं हो सकता। मैं हैरान हूँ कि कुछ लोग कितने गहन हैं और सहजयोग को उन्होंने किस प्रकार अपनाया है। महान कहलाने वाले, महान असूलों के, परन्तु बहुत उग्र स्वभाव के, असहनशील लोग भी सहजयोग को इस प्रकार अपना लेते हैं क्योंकि उनके अन्दर इतनी गहनता है कि हर चीज़ सुगमता से आत्मसात हो जाती है।

सभी लोग प्राप्त कर सकते हैं परन्तु व्यक्ति को अहं तथा बंधनरूपी अपने मस्तिष्क के दो पहियों से सावधान रहना है। भारत में सभी प्रकार के बंधन हैं। पश्चिमी देशों में सभी प्रकार के अहं हैं, भिन्न–भिन्न प्रकार के। मैं हैरान थी कि उसका सामना करने के लिए मैं क्या कहूँ! यह अत्यन्त सूक्ष्म चीज़ है जिसे लोगों ने अपने मस्तिष्क में बिठा लिया है। अतः आज आप लोगों के लिए यह निर्णय होना है कि अभी तक आप नन्हें बालक हैं और नन्हें बालकों की तरह अपने अन्तस की शांति, पावित्र्य और सौंदर्य को स्वीकार करने और आत्मसात करने के लिए आपके पास शुद्ध हृदय होना आवश्यक है। पवित्रता के बिना आप आनन्द नहीं उठा सकते। सहजयोग में यद्यपि बहुत लोग हैं, फिर भी प्राचीन सन्तों की पवित्रता को अभी हमें प्राप्त करना है। हमारे देश में भी बहुत से लोग हैं। उदाहरणार्थ कल ये लोग अली के भजन गा रहे थे। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि वे एक अवतरण थे। उनके पावित्र्य की महिमा लोग अब गा रहे हैं। तब उन्हें सताया गया और उनकी हत्या कर दी गई। और बहुत से सन्त हैं। दम–दम साहिब, निज़ामुद्दीन औलिया आदि।

हमारे देश में इतने अधिक सन्त हुए जितने अन्य किसी देश में नहीं हुए। हमारे यहाँ ही इतने सन्त क्यों हुए ? इसलिए नहीं कि हम कोई बहुत अच्छे लोग थे, परन्तु इसलिए कि हमें सुधारना था। कार्य होने थे इसलिए वे यहाँ अवतरित हुए। यह योगभूमि है। भारत में आप जहाँ कहीं भी जाएं मैं हैरान थी, हरियाणा में बहुत से महान सन्त हुए, परन्तु उन सबको सताया गया, कष्ट दिया गया, कभी उन्हें समझा नहीं गया। यह इतना कष्टदायी है और इससे आपके हृदय को चोट पहुँचती है कि किस प्रकार इन मूर्ख, अज्ञानी और अन्धे लोगों ने उन सन्तों को सताया। तो उन सब सहजयोगियों का यह कर्त्तव्य है कि खोज निकालें कि सन्त कौन है ? **सहजयोग में भी, मैंने देखा है, लोग दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। आपको यदि सत्य की पहचान और सूझ–बूझ नहीं है, आपको यदि इस बात का विचार नहीं है कि सत्य क्या है, प्रेम क्या है, शुद्ध करुणा क्या है तो आप सहजयोगी नहीं हैं। स्थूल दृष्टि से आप व्यक्ति को देखते हैं। उसके गुणों को नहीं देखते। एक तरफा।** अब जबकि मैं इतनी वृद्ध हो गई हूँ, मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी दृष्टि अपनी ओर करें, अन्तर्दर्शन करें क्योंकि आप ही में से कुछ लोग आपके चित्त को भटकाने का प्रयत्न करेंगे, उल्टी सीधी बातें कहने की कोशिश करेंगे। यह कहना अत्यन्त सुगम है कि वह बेईमान है, चरित्रहीन है, यह कहना बहुत आसान है। परन्तु आप क्या हैं ? अब हमें समझना है कि समन्वयन (एकीकरण) द्वारा सहजयोग को दृढ़ करना आवश्यक है। हम एकीकरण में विश्वास करते हैं। **फूट डालने वाली कोई भी चीज़ जब आपके मस्तिष्क में आती है तो तुरन्त आप इसे निकाल फेंके।** आज के दिन मैं आप सब से ये प्रार्थना करती हूँ कि कृपया अन्तर्दर्शन करें, बिना अन्तर्दर्शन के आप स्वयं का भी सम्मान नहीं कर सकते, स्वयं को भी प्रेम नहीं कर सकते। आप यदि स्वयं को प्रेम करेंगे तो अन्तर्दर्शन भी करेंगे और अपनी गलतियों को ढूंढ लेंगे। मान लो मुझे ये साड़ी पसन्द है तो इसके विषय में मुझे यदि कोई संदेह होगा या इस पर किसी प्रकार के धब्बे मुझे नजर आएंगे तो मैं इन्हें साफ करूंगी। इस बात का मुझे कोई गर्व नहीं होगा , इधर–उधर जाकर मैं कहती न फिरूंगी कि देखिए मेरी साड़ी पर इतने धब्बे हैं। **इसी प्रकार आपके अन्दर जो भी असहज स्वभाव है आपको उस पर गर्व नहीं होना चाहिए।** और इस तरह से बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। ईसा ने ऐसे लोगों को 'कानाफूसी करने वाले'(Murmuring Souls) कहा है। उन्होंने कहा कानाफूसी करने वालों से सावधान रहें। मैं कहूँगी कानाफूसी करने वालों को बाहर निकाल दें। केवल यही उपाय है। हिन्दी में उन्हें 'बकवासी' कहते हैं। वे वास्तव में बकवासी हैं अर्थात् वे अन्य लोगों के बारे में सभी प्रकार की उल्टी–सीधी बातें करते रहते हैं। अपने विषय में नहीं जानते कि वे क्या हैं। भारत में ये दोष, मैं स्वीकार करती हूँ, बहुत अधिक है। ऐसा कहने पर मुझे खेद है क्योंकि मैं भी एक भारतीय हूँ। दूसरों की बुराई करने की आदत है, बस बैठ गए और गप–शप शुरु कर दी। वे सहजयोग की बात

नहीं करेंगे, कितने लोग सहजयोग को भली भांति जानते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि **मुझे उपाधियाँ (Degrees) देनी हों तो आपको कौन सी उपाधि दूँ ? आप मुझे बताएं। आप को तो अपनी चैतन्य लहरियों का ज्ञान नहीं है। निःसन्देह आप सहजयोगी हैं क्योंकि आप उत्थान प्राप्ति के जाल में फँस गए हैं। परन्तु वास्तव में कितने लोग इसमें विकसित हुए हैं ? आप विकसित हो सकते हैं।**

मैं बार–बार आपसे कहती हूँ कि मुझे प्रसन्न रखें। इसके लिए आपको सभी घटिया किस्म की बातें त्यागनी होंगी। परन्तु एक दूसरे से समझने का प्रयत्न करें कि हम सहजयोग के विषय में क्या जानते हैं। परस्पर विचार विमर्श करें और अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए सहजयोग को कुछ योगदान करें। बहुत से लोगों को काफी ज्ञान है। मैं ये नहीं कह रही कि वे कुछ नहीं जानते। परन्तु एक बुरा व्यक्ति सभी को उसी प्रकार खराब कर सकता है जिस प्रकार एक सड़ा हुआ सेब सेबों के पूरे ढेर को सड़ा सकता है। तो हमें क्या करना चाहिए? सड़े हुए सेब को बाहर फेंक देना चाहिए। ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है।

मुझे लगता है कि ये सभी कुछ आपका साक्षी है, मौन साक्षी। जब मैं बडे–बड़े पर्वतों को देखती हूँ कि ये महान सन्त हैं जो सब कुछ देख रहे हैं और विश्व में घटित होने वाली सभी घटनाओं को लिपिबद्ध कर रहे हैं, क्योंकि वे भी समझते हैं और जानते हैं।

मुझे आपको बार–बार बताना है कि स्वयं को , अपने चक्रों को, अपने दोषों को देखने का समय आज ही है। इसी से आपको वह स्थायी आनन्द प्राप्त होगा जिसका वचन दिया गया था। आप निर्विचार समाधि को पा लेंगे और निर्विकल्प समाधि को भी , परन्तु अपने अहम् तथा बन्धनों के जाल में कभी न फँसे। आज के दिन मुझे आपको यही बताना है। आज के दिन जब आप मेरा जन्मोत्सव मना रहे हैं आप अपना जन्मोत्सव मनाएं। अपना जन्मोत्सव मनाएं और स्वयं देखें कि आपने क्या प्राप्त किया है और क्या प्राप्त करने वाले हैं। आपके लिए उत्सव मनाने का यही उपयुक्त समय है; तब आप मेरा जन्मोत्सव मनाएं । अपने जन्मोत्सव की अपेक्षा आप का जन्मोत्सव मना कर मुझे प्रसन्नता होगी।

परमात्मा आपको धन्य करें।

शिवरात्रि पूजा

दिल्ली –16.3.1997

18

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(अंग्रेजी से अनुवादित)

मैं इन लोगों से (भारतीय) श्री शिव की पूजा की बात कर रही थी। आपके साथ क्या घटित होना चाहिए ? आज मैं आपको बताऊंगी कि जब आपको आत्मसाक्षात्कार होता है तो हमारे अन्दर क्या घटित होता है। यहाँ ग्यारह रुद्रों का स्थान है वे श्री शिव की शक्तियों के अंश हैं और हमारे अन्दर जीवन के प्रति जो मिथ्या विचार हैं उन्हें निकाल फेंकने के लिए वे सब प्रयत्नशील रहते हैं। जब कुण्डलिनी की जागृति होती है तो वे सब जागृत हो जाते हैं। उदाहरणार्थ : **बुद्ध और महावीर भी उन्हीं का एक हिस्सा हैं। वे सभी हमें बुराइयों में फँसने से रोकते हैं। मान लो हममें अहं है तो बुद्ध इसको नियंत्रित करेंगे और ये देखेंगे कि अपने अहं से आपको सदमा पहुँचे। इस सदमे के पश्चात् आप हैरान हो जाते हैं कि इतने अहंकारी, अपमानजनक और ओछे, आप किस प्रकार हो सकते हैं।** परन्तु जब यह रुद्र जागृत नहीं होता, जब इसमें प्रकाश नहीं होता तब क्या होता है ? तब आप अपने कार्यों को न्यायसंगत ठहराने लगते हैं। आप सोचते हैं कि जो भी कुछ आप करते हैं वह ठीक है। जो भी कुछ आपने किया, जो भी कुछ आपने कहा, जो भी आपने प्राप्त किया, आप सोचते हैं कि वह आपका अधिकार है तथा आपने कुछ गलत नहीं किया। इसके लिए रुद्र रूपी बुद्ध का जागृत होना आवश्यक है। इसके विपरीत यदि आप अहंकारी बनते चले जाएं तो आप पूर्णतः आक्रामक व्यक्तित्व (Right Sided Personality) बन जाएंगे। आप जानते हैं कि ऐसे व्यक्ति की क्या निशानियाँ हैं।

मात्र देखें और अन्तर्दर्शन करें और स्वयं के लिए देखें कि अहं ने आपको क्या हानि पहुँचाई है। स्वयं के विषय में आपके कितने गलत विचार थे। इसी कारण मोहम्मद साहब ने कहा था कि जूतों से अपने अहं की पिटाई करो। अहं को रोकने की कोई और विधि उनकी समझ में नहीं आई। यह अहं वास्तव में, आपके मस्तिष्क का विस्फोट कर सकता है और आप भिन्न कठिनाइयों में फँस सकते हैं। परिणामस्वरूप मैंने देखा है कि लोग युप्पीज़ (Yuppies) रोग ग्रस्त हो जाते हैं जिसमें चेतन मस्तिष्क बिल्कुल बेकार हो जाता है , व्यक्ति हिल भी नहीं सकता, चेतन अवस्था में वह हिल–डुल नहीं सकता परन्तु अचेतन स्थिति में वह हिल–डुल सकता है। यह रोग इतना भयंकर है कि व्यक्ति रेंगने वाले जीव की तरह से हो जाता है। ऐसे लोगों को कन्धे पर लाद के ले जाना पड़ता है, स्वयं तो वे

चल भी नहीं सकते, बैठ भी नहीं पाते। बहुत ही छोटी उम्र में ऐसा हो सकता है। अमेरिका में ऐसा हुआ है और भारत में भी मैंने ऐसे कुछ रोगी देखे हैं। अतः यदि आप अपने अहं का ध्यान नहीं रखते, इसे नियन्त्रित नहीं करते इस पर आपको पश्चाताप नहीं होता (यद्यपि सहजयोग में पश्चाताप जैसी कोई चीज़ नहीं है क्योंकि हमें विश्वास है कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है और आप गलतियों से परे हैं) तो आपको परेशानी हो सकती है। अपनी गलतियों पर हमें पश्चाताप होना चाहिए। अंग्रेजी में एक शब्द है (Sorry) "मुझे खेद है" हर चीज़ के लिए खेद है, फोन उठाते हुए भी वे कहते हैं "मुझे खेद है"। हर चीज़ के लिए वे कहते हैं "मुझे खेद है"। काहे का खेद ? परन्तु यह खेद भी अर्थहीन है इसमें कोई गहनता नहीं। मुझे खेद है कहते हुए आपको देखना चाहिए कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं और कौन सी त्रुटि का सुधार होना आवश्यक है।

आज की पीढ़ी में बहुत बड़ी समस्या यह है कि उसमें भयानक अहं विकसित हो गया है क्योंकि हमारी सारी आर्थिक उन्नति ने, औद्योगिक विकास ने बड़ी–बड़ी संस्थाओं ने हमें एक मार्ग दिया है कि हम अपने अहं को विकसित करें। बताया गया है कि यदि हम अपने अहं को विकसित नहीं करते तो हम खो जाएंगे, कहीं के नहीं रहेंगे। इस प्रकार हम अहं को बढ़ावा देने लगते है तथा दाईं ओर की समस्याएं आरंभ हो जाती हैं। तब प्रतिक्रिया के रूप में इसका प्रभाव बाईं ओर पर पड़ता है। वास्तव में बाईं ओर का स्थान हमारे सिर में दाईं तरफ है तो हमारा अहं बाईं आज्ञा में आ जाता है। श्री महावीर बाईं ओर के रुद्र हैं। अहंवश होकर लोग पापमय, अनुचित कार्य करते हैं जो श्री गणेश के विरुद्ध हैं। श्री महावीर जी की शक्तियाँ नियंत्रण करती हैं, वे कहते हैं कि तुम नर्क में जाओगे, ऐसा होगा। उन्होंने सभी प्रकार के नर्कों का वर्णन किया है तथा आपको डराने के लिए बताया है कि आप नर्क में जाओगे जहाँ आपको जिन्दा जलाया जाएगा, आदि–आदि। परन्तु इससे कोई लाभ नहीं होता और लोग बाईं ओर को, इस रुद्र की ओर, झुकने लगते हैं तथा ये रुद्र मजबूर हो जाता है और ऐसे व्यक्ति को भयंकर उदासीनता रोग हो जाता है। व्यक्ति भयंकर उदासीन हो जाता है। हे परमात्मा! मुझे यह कैसा रोग हो गया है ? मैं इतना बीमार हूँ, आदि, आदि। अपनी उदासीनता से आप अन्य लोगों को डराने लगते हैं, आप भावनात्मक भय–दोहन (Emotional Blackmail) करने लगते हैं, अपना सिर पीटते हैं आदि, आदि। ऐसा अहं के कारण भी हो सकता है और बाईं ओर की समस्याओं के कारण भी।

ये दोनों रुद्र बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन दोनों का सम्बन्ध सीधे हमारी बायीं और दायीं अनुकम्पी प्रणाली से है। अतः यह आवश्यक है कि इनको ठीक करते हुए आप इन दोनों रुद्रों के शिकार न बन जाएं। इन रुद्रों का संतुष्ट होना आवश्यक है। अतः सामान्य होने के लिए इन दो रुद्रों का ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि इनमें से

एक अहं का नियंत्रण करता है दूसरा आत्मग्लानि का। मैं ऐसा नहीं कर सकती। इस प्रकार के उदासीनता आदि रोगों का शरीर पर भी गंभीर प्रभाव पड़ता है, इससे कैंसर तक हो सकता है। यदि ये रुद्र पकड़ जाएं तो व्यक्ति को कैंसर हो जाता है। आज्ञा में मेधा सूज जाती है। पूरा हिस्सा ही सूज जाता है। किसी कैंसर के रोगी को आप देखें तो उस पर सूजन दिखाई देगी, कम से कम मस्तक के बायीं या दायीं ओर। व्यक्ति के स्वभाव में इतना दोलन (Swing) होता है कि कहा नहीं जा सकता कि कौन से रुद्र से आपने मनोदैहिक रोग ले लिए हैं।

सभी प्रकार के मनोदैहिक रोग रुद्रों के प्रभावहीन हो जाने के कारण, उदासीन या निष्ठुर स्वभाव के कारण भी होते हैं। यह बहुत से अन्य कारणों से भी हो सकते हैं। परन्तु यह सभी कारण श्री शिव या सदाशिव की शक्तियों के अंग–प्रत्यंग ही होते हैं। श्री शिव करुणा से परिपूर्ण हैं, वे करुणा के सागर हैं। आप यदि उनसे क्षमा माँगें तो वे क्षमा कर देते हैं, चाहे जो भी अपराध आपने किया हो। परन्तु यदि आप सोचते हैं कि आपने जो भी किया अच्छा किया, आपने कभी किसी को परेशान नहीं किया, किसी को दुःख नहीं दिया तो ये सब जानते हैं। शिव सभी कुछ जानते हैं और अपनी जानकारी के कारण वे त्यागने लगते हैं, आपको आपके भाग्य पर छोड़ देते हैं। अतः आपकी अपनी इच्छा शक्ति तथा शिव के आशीर्वाद का बहुत बड़ा योगदान है। जब शिव आपको आशीर्वादित करते हैं तो आपकी इच्छा शक्ति भी बहुत उच्च हो जाती है। परन्तु ये जानने के लिए कि आपको अत्यन्त उच्च स्तर का व्यक्ति होना है। आपमें पूर्ण इच्छा शक्ति होनी चाहिए वे बिल्कुल सांसारिक किस्म के नहीं है। मान लीजिए कि श्री शिव को किसी पार्टी आदि में जाने के लिए कहा जाए तो वे कैसे लगेंगे ? वहाँ लोग उन पर हँसेंगे। मैं जब कुछ हिप्पियों से मिली और उनसे पूछा कि तुम इस प्रकार के बेतुके बाल क्यों रखे हुए हो ? उन्होंने उत्तर दिया कि हम आदि मानव बनना चाहते हैं। मैंने कहा कि आपका मस्तिष्क तो आधुनिक है, आदि मानव की तरह बाल रखने का क्या लाभ है?

तो धोखा, स्वयं को धोखा देने से कोई लाभ न होगा। सबसे अच्छी बात तो ये होगी कि स्वयं का सामना करें और समझें कि आप क्या गलतियाँ करते रहे हैं ? यदि ऐसा हो जाए, और जितने भी सहजयोगी यहाँ बैठे हैं, मैं आपको बता दूं, यदि आप स्वयं को सुधार लें और शिव सम बन जाएँ तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी समस्याएं , राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य सभी प्रकार की समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। परन्तु आज कलियुग के कारण ऐसा वातावरण बन गया है कि अच्छे–बुरे सभी प्रकार के लोग चले जा रहे हैं। अब हमारी जिम्मेदारी है कि विश्व की रक्षा करें, एक अत्यन्त सम्माननीय जीवन की सृष्टि करें जो दिखावा मात्र (सतही) न हो। यह अन्दर से इस प्रकार विकसित हो कि आपकी आत्मा का प्रकाश फैले और पूरे विश्व को प्रकाशित करे। यह समझना अत्यन्त आवश्यक है। ये सब कष्ट,

रोग, मनोदैहिक रोग तथा अन्य सभी समस्याएं जैसे :–राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य समस्याएं मानव की बनाई हुई हैं। सामूहिक रूप से ये कलियुग की देन है। परमेश्वरी शक्ति ने इन्हें नहीं बनाया। अतः यदि बहुत से सहजयोगी हों, जो सत्यनिष्ठापूर्वक सहजयोग कर रहे हों, तो यह परमेश्वरी शक्ति इन्हें निष्प्रभावित करने का प्रयत्न करती है। यदि ऐसा हो जाए, यदि ये उपलब्धि हम पा सकें तो, मैं सोचती हूँ, हम बहुत कुछ कर सकते हैं– मानव के हित के लिए बहुत कुछ। इसी कारण आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है। ये केवल आपके लिए ही नहीं है, केवल आपके परिवार के लिए ही नहीं है, केवल आपके नगर या देश के लिए ही नहीं है परन्तु यह पूरे विश्व के लिए है।

सहजयोग कार्यान्वित होगा। आपने यदि परस्पर मुकाबला करना है तो उत्थान में करें, और किसी चीज़ में नहीं। परन्तु लोग इतने उथले हैं कि वे सोचते हैं कि दिखावा करने से या अपने आपको बहुत बड़ी चीज़ मान बैठने से वे उत्थान का बहुत ऊँचा स्तर पर लेंगे। परन्तु ऐसा नहीं है। स्वयं के प्रति भी अत्यन्त विनम्र दृष्टिकोण होना चाहिए ताकि आप समझ सकें कि आपके सभी कार्य ब्रह्माण्डीय समस्याओं के समाधान के लिए हैं। निःसन्देह आप इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं क्योंकि आप ही परमात्मा के माध्यम हैं। यदि मैं अकेली ये सब कार्य कर सकती तो मैंने कर दिया होता, परन्तु मैं ये कार्य करने में असमर्थ हूँ। इसीलिए मुझे आप सब लोगों को यह बताने के लिए इकट्ठा करना पड़ा कि आपको परमात्मा का माध्यम बनना होगा। परन्तु साथ ही साथ आप जीवन का आनन्द ले रहे हैं। आपका हर क्षण आनन्द बन जाता है। यह भी श्री शिव का ही वरदान है। शिव ही इस महान सराहना तथा हर क्षण की महान अनुभूति की सृष्टि करते हैं। यही स्थिति आपने प्राप्त करनी है, अपनी भर्त्सना द्वारा नहीं और न ही अपने अहं को बढ़ावा देकर, परन्तु ये देखते हुए कि आप क्या हैं। यही विशेष चीज़ है जिसे आपने देखना है, कि आपमें क्या बुराइयाँ है। आप स्वयं ही स्वयं को कष्ट दे रहे हैं। इस बात को यदि आप समझ लें तो मुझे विश्वास है, पूर्ण विश्वास है कि आप इतनी बहुमूल्य चीज़ बन जाएंगे जो पूरे विश्व के लोगों को, स्वयं को देखने और परिवर्तित होने में सहायक होगी। समस्याओं की जड़ें इतनी गहन हैं कि उथले स्तर पर रहते हुए आप परिवर्तित नहीं हो सकते। माँ कुण्डलिनी आपको इस प्रकार आशीर्वादित कर रही हैं। मैं कहूँगी, कि आप सत्य, प्रेम और आनन्द के मार्ग पर, वास्तव में, एक महान मशाल (ज्योति) बन सकते हैं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

दिवाली पूजा

पुर्तगाल – 10 नवम्बर , 1996

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(अनुवादित)

आज हम महालक्ष्मी की पूजा करेंगे। मैं सोचती हूँ कि इस देश में उनकी बहुत पूजा बहुत की जाती है। उन्हें यहाँ मारिया के रूप में पूजा जाता है और मारिया का यहाँ स्वयंभु भी है और उनकी आलौकिक झलक भी यहाँ देखी गई है। पहले तो मुझे लगा था कि ऐसा नहीं हो सकता परन्तु चैतन्य लहरियाँ महसूस करने के बाद, मैं जानती हूँ , कि यह सत्य था क्योंकि उन्होंने साकार रूप में अपनी झलक दिखाई थी। वे मेरे सम्मुख भी दिखाई दीं। आपने एक फोटो में अवश्य देखा होगा। यही नियम है जिससे आप इस स्थिति तक उन्नत हुए हैं। कुण्डलिनी के उत्थान के लिए महालक्ष्मी शक्ति ने उत्थान के मध्य मार्ग की सृष्टि की है। कोल्हापुर के महालक्ष्मी मन्दिर में लोग सदा "उदे–उदे अम्बे" भजन गाते हैं। वहाँ मैंने लोगों से पूछा " महालक्ष्मी के मन्दिर में आप अम्बे का भजन क्यों गाते हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया कि "हम नहीं जानते कि हम ऐसा क्यों करते हैं परन्तु क्या यह गलत है?" मैंने कहा "नहीं, क्योंकि महालक्ष्मी मार्ग से ही कुण्डलिनी का उत्थान हो सकता है और कुण्डलिनी ही अम्बा है।" इस प्रकार उन्होंने समझा और वास्तव में बहुत हैरान हुए। प्राचीन समय से यह भजन वहाँ गाया जाता है परन्तु उन्हें यह कभी न समझ आया था कि यहाँ वे ऐसा क्यों करते हैं।

महालक्ष्मी जी के विषय में हमें समझना है कि इनका क्या कार्य है। महालक्ष्मी शक्ति ने हमारे अन्दर कुण्डलिनी के उत्थान के लिए एक उचित सन्तुलन , एक उचित मार्ग बनाया है। बायें और दायें को सन्तुलित किया है और वही (महालक्ष्मी) कुण्डलिनी के उत्थान के लिए एक अपेक्षाकृत खुला मार्ग बनाती हैं। यह करुणा एवं प्रेम का मार्ग है। करुणा एवं प्रेम के माध्यम से वे इस मार्ग की सृष्टि करती हैं क्योंकि वे जानती हैं कि यदि मार्ग चौड़ा न होगा तो कुण्डलिनी उठ न सकेगी। अन्ततोगत्वा व्यक्ति एक ऐसी अवस्था में पहुँच जाता है जहाँ खोज आरम्भ हो जाती है और इसी खोज (जिज्ञासा) से ही आपका महालक्ष्मी तत्व जागृत हुआ है। यह जागृत है और कभी–कभी तो ये इतना शक्तिशाली होता है कि आप पागलों की तरह से खोजने लगते हैं। यह कहते हुए मुझे खेद है कि बहुत से लोग इसी खोज में खो गए, परन्तु बहुत से लोग उचित मार्ग और उचित उत्थान की ओर भी आ गए।

एक अन्य चीज़ जो महालक्ष्मी तत्व करता है वह यह है कि यह कुण्डलिनी शक्ति को भिन्न चक्रों पर जाने देता है। भिन्न चक्रों तक जाने के लिए यह मार्ग बनाता है और सभी चक्रों को शुद्ध करता है। यह अत्यन्त लचीली शक्ति है जो कुण्डलिनी का भिन्न चक्रों तक मार्गदर्शन करती है और यह समझती है कि किस चक्र को कुण्डलिनी की आवश्यकता है। आपने देखा होगा कि जब कुण्डलिनी

उठती है तो जहाँ भी वह जाती है, जहाँ भी आवश्यक समझती है आपकी जागृति के लिए वह किस प्रकार धड़कती है! यह सब घटित होता है क्योंकि वह करुणा एवं प्रेम से परिपूर्ण हैं और चाहती है कि आप पूर्व सत्य को प्राप्त करें। सहजयोग में, जैसा कि आप जानते हैं, हमारे साथ बहुत सी समस्याएं हैं क्योंकि उत्थान के समय लोग अपने साथ बहुत से पूर्व बन्धन लिए हुए होते हैं वे उठते हैं फिर गिरते हैं, पुनः उठने का प्रयत्न करते हैं और फिर नीचे आ जाते हैं।

आज मैं आपको बताने वाली हूँ कि व्यक्ति को कौन सी स्थिति प्राप्त करनी है। **'स्थितप्रज्ञ'** का वर्णन करते हुए गीता के दूसरे अध्याय में श्री कृष्ण ने इसका वर्णन किया है परन्तु इसे समझ पाना बहुत कठिन है। श्री कृष्ण आपकी माँ की तरह से स्पष्ट न थे। अतः लोग नहीं समझ पाते कि उन्होंने क्या कहा और वे प्रश्न करते हैं कि कैसे ? आप स्थितप्रज्ञ की स्थिति में किस प्रकार पहुँचते हैं ? कैसे आप वह अवस्था प्राप्त करते हैं ? ज्ञानेश्वर ने जब ज्ञानेश्वरी लिखी तो उन्होंने इसे **'सहज–स्थिति'** कहा, अर्थात् सहज अवस्था। उन्होंने इसे स्थितप्रज्ञ नहीं कहा। उन्होंने सहज का अत्यन्त सुन्दर और अत्यन्त सूक्ष्म रूप से वर्णन किया है। निःसन्देह ज्ञानेश्वर जी को भी बहुत कम लोग समझते हैं। जो व्यक्ति उस स्थिति को पा लेता है वह एक दर्पण सम है जिसमें बहुत लोग अपने चेहरे देखते हैं। बहुत से लोग दर्पण के सम्मुख अपना साज–शृंगार करते हैं परन्तु दर्पण जैसा का तैसा रहता है। तो जो व्यक्ति स्थितप्रज्ञ हैं, सहज व्यक्ति की तरह, वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि उसके सम्मुख कौन है, कौन सामने खड़ा है, वह कहाँ है। वह अपने अन्दर बना रहता है। सूर्य की तरह से वह अपने अन्दर धारण करता है। सूर्य यदि अपनी किरणों से क्रीड़ा करता है तो वह खो नहीं जाता। सभी किरणें उसके पास वापस आ जाती हैं। **इसी प्रकार हमारी जितनी भी इन्द्रियाँ हैं वे हमारे इर्द–गिर्द क्रीड़ा करती हैं। परन्तु सहज स्थिति में जो व्यक्ति है उस पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह लिप्त नहीं है। वह तो मात्र क्रीड़ा करता है। यही स्थिति आपने प्राप्त करनी है तब आप वास्तव में सहजयोगी होंगे।** परन्तु अब भी मैं देखती हूँ कि लोग सहजयोग से धन बटोरने में ही खोए हुए हैं। कुछ लोग अगुआपने के चक्कर में , कुछ लोग ईर्ष्या और द्वेष के चक्कर में खो जाते हैं। तो इसका अर्थ यह हुआ कि अभी तक अन्तस में बहुत सा कार्य होना बाकी है। **परन्तु यदि आप सभी कुछ समर्पित कर दें तो कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि मैं सदा कहती हूँ कि 'ध्यान–धारणा' करें, क्योंकि जब आप ध्यान–धारणा करते हैं तो आपको पतन की ओर ले जाने वाली सभी चीज़ें समाप्त हो जाती हैं। शनैः शनैः ये सब लुप्त हो जाती हैं क्योंकि आप स्वयं आत्मा बन जाते हैं। आप स्वयं को धारण करते हैं। आप कभी ऊबते नहीं, मैं कभी नहीं ऊबती। इसका (ऊबने का) तो मुझे अर्थ ही नहीं पता। चाहे मैं आपके साथ हूँ या अकेली, मैं कभी नहीं ऊबती। ऊबने की कौन सी बात है? यदि आप किसी भी चीज़ से लिप्त नहीं हैं तो आप कभी ऊबेंगे नहीं।**

एक और बात है कि आप इन सब चीज़ों से ऊपर उठ जाएंगे जैसे लालच से। अब जो लोग

लालची हैं वे यहाँ–वहाँ पैसा बनाने में ही लगे हुए हैं। जो लोग अभी तक कामाक्षी हैं वे ऐसी ही किसी चीज़ का आयोजन कर रहे हैं। परन्तु सहजस्थिति में आप मात्र देखते हैं, मात्र साक्षी बन जाते हैं किसी ऐसी चीज़ में नहीं खो जाते जो आपको पतन की ओर ले जाए। आप लोगों के लिए यह स्थिति प्राप्त कर लेना कठिन कार्य नहीं है क्योंकि आप अपने मन के स्तर को पार कर चुके हैं। ये सब चीज़ें आपको मन के माध्यम से आती हैं। मैंने पहले भी बताया है कि मन मिथ्या है और आप सब लोगों को यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए। मिथ्या बात यह है कि मन आपको विचार देता है। कुछ लोग सोचते हैं, " हाँ श्री माता जी परन्तु" यह 'परन्तु' आपके मन से आ रहा है।

मस्तिष्क वास्तविकता है, मन नहीं। मन कहता है 'परन्तु' और तब कभी–कभी आप अत्यन्त खिन्न तथा निराश (Depressed) महसूस करने लगते हैं। कुछ लोग इतने अच्छे है कि उन्हें अच्छा नहीं लगता कि सहजयोगी इतने कम हैं। कोई बात नहीं। केवल देखें और यह साक्षी अवस्था, मात्र देखने की स्थिति, ही सहज है। इसमें आप सूक्ष्म हो जाते हैं, आप अपनी आत्मा बन जाते हैं अर्थात् इतने सूक्ष्म हो जाते हैं कि कुछ भी आपको परेशान नहीं कर सकता। कुछ भी आपको परिवर्तित नहीं कर सकता। अब आप प्रकृति को जैसे है वैसे देखें, आप जानते हैं कि 92 तत्व हैं और इन 92 तत्वों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता; आप चांदी को सोना और सोने को चांदी नहीं बना सकते। अणु इस ढंग से व्यवस्थित हैं कि उनकी अपनी कुछ मिश्रण शक्तियाँ हैं; इसके अतिरिक्त परमाणु भी इस ढंग से व्यवस्थित हैं कि उनकी अपनी एक बनावट है जिसे आप परिवर्तित नहीं कर सकते। यदि आप इसे परिवर्तित करने का प्रयत्न करेंगे तो बम्ब, एटम बम्बों, की रचना करेंगे। यह पूर्णतः विध्वंसक हैं। केवल मानव ही बदल सकता है, उसका आकार व स्वभाव परिवर्तित हो सकता है।

अब आशीर्वादों को देखें कि आप मानव हैं और आप परिवर्तित हो सकते हैं, आपको एक नए तत्व में– आत्मा में– परिवर्तित किया जा सकता है। मानव की यही विशेषता है। परन्तु यदि किसी का कोई कुगुरु है जो उसे परिवर्तित करने का प्रयत्न करता है तो उस व्यक्ति का विस्फोट हो सकता है। कुगुरुओं के पास जाने वाले लोगों को मैंने देखा है, वे मूर्च्छित हो जाते हैं। अब भी उन्हें समस्याएं हैं, अन्य लोगों की अपेक्षा उन्हें अधिक कष्ट भुगतने पड़ते हैं। वे भी सुधरे हैं। परन्तु एक बात जो व्यक्ति को समझनी चाहिए वह ये है कि जब आप अणु या परमाणु को तोड़ते हैं और इसे परिवर्तित करने का प्रयत्न करते हैं तो इसका विस्फोट हो जाता है। यह कार्यान्वित नहीं होता। जब आप समन्वय करने का प्रयत्न करते हैं तभी प्रकृति में आप कोई चीज़ बना सकते हैं जैसे समन्वयन से ही उसे प्रकाश में लाया गया है। प्लास्टिक भी समन्वय से बनाया गया है। पदार्थ का समन्वय किया जा सकता है तथा मानव का समन्वयन किया जा सकता है। **मानव का समन्वयन पदार्थ से कहीं बेहतर किया जा सकता है, क्योंकि मानव परिवर्तित हो सकता है, उसमें स्वभाव परिवर्तन किए जा सकते हैं।** अब देखें उदाहरणार्थ : यह सोना है। इसमें से जो चाहे आप बना लें। सोना तो सोना है। इसमें यदि आप गहने बना लें तो भी यह सोना ही रहेगा। परन्तु मानव का यदि समन्वयन किया जाए तो वे

परिवर्तित हो जाते हैं।

पदार्थ, प्रकृति और मानव में बहुत अन्तर है। पदार्थ और प्रकृति मानव से पूर्णतः भिन्न हैं। एक बार परिवर्तित होने के पश्चात् मानव जीवन्त प्रक्रिया सम हो जाते हैं, वे फूलों की तरह बन जाते हैं परन्तु अब भी वे वैसे नहीं हैं जो आप प्रकृति में देखते हैं। वे ऐसे इसलिए नहीं हैं क्योंकि प्रकृति में मन नहीं है, प्रकृति केवल परमात्मा के नियंत्रण में है और उसी प्रकार से कार्य कर रही है। परन्तु आप सब अपने नियंत्रण में हैं। आप अपना नियंत्रण स्वयं करते हैं। यह समन्वय जो आपके अन्दर हो रहा है इसमें आप पाते हैं कि आपका स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण है। आप जानते हैं कि आपके साथ क्या घटित हो रहा है। अब आप स्वयं को अन्य चीजों से अलग होते हुए देख सकते हैं। कुछ लोग आकर मुझे बताते हैं, "श्री माता जी, मेरा अहं बहुत खराब है। कृपया इसे निकाल दें।" वह देखता है कि समस्या क्या है। कोई अन्य आकर कहता है, "श्री माता जी मेरी नाभि बहुत खराब है, मैं अब भी पैसे के चक्कर में उलझा हुआ हूँ।" वह इसे देखता है। **सबसे पहले स्वयं के विषय में ज्ञान आने लगता है, इसे हम आत्मज्ञान** (Self Knowledge) **कहते हैं। परन्तु व्यक्ति को उस आत्मज्ञान से भी आगे जाना होता है। उस ज्ञान से आप क्या करेंगे ?** हमें देखना है। सर्वप्रथम हम कहते हैं कि ज्ञान नहीं है। अज्ञान है, अन्धेरा है। अब प्रकाश आ गया है अब आप देख सकते हैं। अब जान सकते हैं क्या गलत है और आपके अन्दर जो भी कुछ गलत है उससे आप स्वयं को अलग करने लगते हैं। उन गलतियों को आप देखते हैं। बहुत सी मूर्खतापूर्ण चीजें हैं। जैसे : हममें ईर्ष्या जलन, लोभ और कामुकता है। दिवाली के दिन इन सब चीजों की बात करना अच्छा नहीं है।

दिवाली अर्थात् एक–एक करके बहुत से दीप प्रज्जवलित किए जाते हैं और पहली बार आप देखने लगते हैं कि आपमें क्या त्रुटि है। तब आपको समझ आता है कि इसकी आपको कोई आवश्यकता नहीं और इससे छुटकारा पाने के लिए, इसके शुद्धिकरण के लिए आप कार्य करने लगते हैं। अब यह ज्ञान लुप्त हो जाता है। आपको कोई ज्ञान नहीं पाना होता। जो आपके पास है, है। आपको अपने चक्रों के विषय में जानने की कोई आवश्यकता नहीं, आप तो बस स्थित हैं। उस स्थिति में सभी कुछ महत्वहीन है। आप एक पत्थर सम हो जाते हैं। मैं कह सकती हूँ, एक ऐसे पत्थर सम जिसमें मस्तिष्क, हृदय और जिगर अखण्ड हैं। आपको कुछ बुरा नहीं लगता, कोई चीज़ आपको विचलित नहीं करती आप केवल सुन्दर प्रेम एवं करुणा का आनन्द लेते हैं। उसकी तरंगे आपकी ओर लौटकर आती हैं, वो भी, कुछ समय पश्चात् समाप्त हो जाती हैं और आप 'सहज' के सिवाय कुछ नहीं रह जाते। प्राचीन लोगों ने यही स्थिति प्राप्त की थी। उन दिनों लोगों ने यह स्थिति प्राप्त तो की परन्तु इसके साथ एक बुरी चीज़ जो हो गई वो यह थी कि वे सब इसमें खो गए। अन्य लोगों के लिए वे कुछ न कर सके। एक व्यक्ति को यह स्थिति प्राप्त हो गई, वह महान बन गया और बस समाप्त। या अधिक से अधिक दो व्यक्ति बन गए। तो अब सहजयोग ज्ञान की स्थिति पर खड़ा है जहाँ आपको ज्ञान प्राप्त होता है। सबसे पहले आपको स्वयं के विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। आत्मज्ञान पूर्ण अवश्य होना चाहिए।

तीसरी स्थिति में, जब ज्ञान पूर्ण होता है तब स्वयं के विषय में जिन भी बेकार की चीजों के विषय में आप जानते हैं, जो आपकी उन्नति में रुकावट डाल रही है, जिन्हें आप गलत समझते हैं, उनसे आप छुटकारा पा लें। जैसे : मैं अपनी साड़ी पर कुछ कचरा गिरते हुए देखती हूँ तो तुरन्त इसे साफ करती हूँ। तब आप उस सहज स्थिति में स्वयं को अलग करने लगते हैं।

इससे आगे भी सहजयोग में आप एक अन्य आयाम विकसित करते हैं जिसे सामूहिक चेतना कहते हैं। यही आधुनिक सहजयोग है। प्राचीन काल में साधकों को ये प्राप्त न होता था, अतः वे सब खो जाते थे। अब आपके पास सामूहिक चेतना है और उस सामूहिक चेतना में आप अन्य लोगों को महसूस करने लगते हैं, अन्य लोगों के लिए आपमें भावनाएं एवं करुणा जाग उठती है और उनके लिए आप कार्य करने लगते हैं। परन्तु कभी–कभी ये सब करते हुए भी आप सोचते हैं कि इससे मैं कितना धन बना सकता हूँ ? एक अगुआ के रूप में मैं क्या प्राप्त कर सकता हूँ या इसी प्रकार की कई और बातें अभी भी आपके अन्दर हैं। परन्तु ये सामूहिक चेतना बढ़ने लगती हैं। जब ये बढ़ने लगती हैं तब आप सागर के अन्दर बूंद बन जाते हैं, अर्थात् पूर्ण सागर। सागर की अपनी मर्यादायें होती हैं। तो सागर की अपनी ही मर्यादाएं हैं, बिना कोई चिन्ता किए यह मर्यादाओं में रहता है। आपकी सीमाएं यह पार नहीं करना चाहता। इसी प्रकार आप लोग भी आत्मविकसित हो जाते हैं। आप स्वार्थी नहीं हैं परन्तु आप आत्मकेन्द्रित हैं, अपने अन्तस में सीमित हैं। मैं जानती हूँ कि बहुत से सहजयोगी इस बात पर नाराज हैं कि मैंने उन आसुरी प्रवृत्ति लोगों को दण्ड नहीं दिया जिन्होंने सहजयोग को बहुत हानि पहुँचायी है। मुझे कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ये परम चैतन्य जो इतना कार्य कर रहा है वह इससे भी निपटेगा। मैं किसी की चिन्ता क्यों करूं ? आप देख रहे हैं कि बहुत से कार्य हो रहे हैं, तो दखलंदाजी क्यों की जाए ? **मेरा कार्य सिर्फ देखना है, केवल देखना। यही काफी है। इस जीवन में मुझे किसी का वध करने की या किसी का विनाश करने की कोई आवश्यकता नहीं। वे स्वयं को ही नष्ट कर देंगे।** मैंने आपको बताया कि मुझे किसी का पर्दाफाश करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु जिस भी देश में मैं जाती हूँ, मैं देखती हूँ कि वहाँ बुरे लोगों का पर्दाफाश हो रहा है।

परमात्मा जानते हैं कि और क्या होगा। किसी भी देश पर ज़रा सा चित्त डालने से ही कार्य हो जाता है, बिना मुझे पता चले, हे परमात्मा , मैंने कहा, मैंने ऐसा कब किया था ? अतः व्यक्ति को परमेश्वरी प्रेम की शक्ति बनना है, कार्यरत परमेश्वरी शक्ति के प्रति समर्पित। यह शक्ति भी मुझ ही से निकली है, मुझ ही से पृथक हुई है। मैं अकेली हूँ, पूर्णतः अकेली, यहाँ तक कि यह शक्ति भी मुझसे पृथक हो गई है। परन्तु ये शक्ति जानती है कि मानव के लिए, सहजयोग के लिए क्या अच्छा है और अपने आप यह कार्य करती है। मैं दखलंदाजी नहीं करती। यह स्वाभाविक कार्य (प्रतिवर्ती क्रिया –Reflex Action) हो सकता है कि आप कहें कि श्री माता जी आपने यह कार्य कर दिया है। हाँ ठीक है, जैसा भी है। परन्तु मैं दखलंदाजी नहीं करती। इसे मुझे कुछ बताना नहीं पड़ता। यह स्वतः कार्य करती है और बहुत अच्छा। मैं एक उदाहरण दूंगी।

बहुत समय पूर्व इंग्लैंड में सहजयोगियों ने कहा कि " श्री माता जी हम बहुत लम्बी ग्रीष्म ऋतु चाहते हैं। " मैंने कहा कि आप ऐसी चीजें क्यों मांगते हैं? नहीं श्री माता जी हमारे लिए ग्रीष्म ऋतु तो लम्बी होनी ही चाहिए, तीन–चार बार उन्होंने कहा और लंदन में भयंकर गर्मी का मौसम बहुत लम्बे समय तक रहा। भारत की तरह से यहाँ पंखे आदि तो हैं नहीं। हमारा एक छोटा सा बरामदा था जिसमें हम सोते थे। लंदन में दुकान पर जाकर हमने पूछा कि कोई पंखा आदि मिल सकता है ? यदि आप इसके लिए कहें तो तीन माह के पश्चात हम यह पंखा मंगवा कर दे सकते हैं। तीन माह पश्चात जब भयंकर ठंड हो जाएगी ? तो मेरी पुत्री ने हमें वायुयान द्वारा दो पंखे भेजे, जिससे हमने काम चलाया। गर्मी इतनी भयानक थी कि उसके पश्चात जो अच्छी घटना हुई वह यह थी कि पत्तों पर पीला सा रंग आया जो धीरे–धीरे लाल होता गया। उस वर्ष शरद–ऋतु बहुत अच्छी थी। तभी एक सहजयोगी को स्वप्न आया कि श्री माता जी ने मुझे अपने घर के पीछे आँगन में गाड़ी में घुमाने के लिए कहा है। मैं नहीं जानती थी कि उसे क्या स्वप्न आया है, मैंने उसे टेलिफोन किया कि क्या तुम कुछ समय के लिए आ सकते हो ? मैं इस शरद–ऋतु में पूरा इंग्लैंड देखना चाहती हूँ। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं ? पूरा इंग्लैंड शरद सौन्दर्य से परिपूर्ण था। तो यदि इस प्रकार की कोई अति हो भी जाए तो भी इसकी क्षतिपूर्ति हो जाती है। सभी कुछ इतना सुन्दर था, सभी लोग प्रकृति के सुन्दर रंगों, भिन्न प्रकार की हरियाली, पीले तथा लाल रंग को देखने के लिए घरों से बाहर निकल पड़े थे। आश्चर्य की बात है कि उस देश में ये सब देखने को नहीं मिलता, परन्तु क्योंकि सूर्य इतना तेज चमका था, परम चैतन्य ने इसकी क्षतिपूर्ति कर दी थी।

परम चैतन्य इसकी देखभाल कर रहा है, वही इन सब चीज़ों को चला रहा है। मैं कुछ नहीं कर रही। मैं निष्क्रिय हूँ। मैं तो मात्र बैठी हूँ और देख रही हूँ। मेरे लिए किसी चीज़ का महत्व नहीं। आप देख रहे हैं कि धीरे–धीरे निरन्तर ये कार्यान्वित हो रहा है। आप यदि मुझे कुछ बताते हैं, मान लो उन्होंने कहा, "श्री माता जी हमने आपको प्रार्थना की और ऐसा घटित हो गया", ठीक है ऐसा हो सकता है। इन लोगों ने मेरे विषय में सुना होगा और कार्य को किया होगा, तो इसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।

जो भी कुछ आप सोचते हैं कि मैं करती हूँ, वह मेरे द्वारा नहीं होता, यह सब परम चैतन्य द्वारा होता है क्योंकि मैं आपसे भी पृथक होती हूँ, पूर्णतः पृथक। अतः वे कहते हैं कि अब आप प्रार्थना करें, आप प्रार्थना कर सकते हैं। यदि आप प्रार्थना करते हैं तो आप अपने इर्द–गिर्द विद्यमान देवी–देवताओं से प्रार्थना करते हैं, इन सब गणों से प्रार्थना करते हैं, मुझसे प्रार्थना नहीं करते क्योंकि मुझे इन सबसे कुछ नहीं लेना–देना। वे मुझे नहीं बताते कि मुझे ये कार्य करना है या वो कार्य करना है। तो मैं उन्हें कुछ करने के लिए क्यों कहूं ? यह इसी प्रकार है और इस अवस्था में यदि आप रह सकते हैं तो आप सहज स्थिति में हैं, जिसमें आप किसी चीज़ की आशा नहीं करते, कुछ नहीं चाहते। मैं सभी कुछ करती हूँ। सभी प्रकार के कार्य मैं कर रही हूँ। सूर्य की तरह, यदि वह कुछ कर रहा है तो मैं भी कर रही हूँ अर्थात् मैं फूलों आदि की देखभाल कर रही

हूँ, आपके उपहार भी ले रही हूँ और आपसे कुछ ले ही नहीं रही। मेरे पास कुछ नहीं है। किसी चीज़ में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। आप पुष्प चढ़ाना चाहते हैं, ठीक है फूल हैं या नहीं आपको फूल मिल जाएंगे। एक व्यक्ति के रूप में मुझे इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु आपकी माँ के रूप में मैं आपको प्रेम करती हूँ, आप सभी को मैं प्रेम करती हूँ परन्तु आपको प्रेम करने के लिए मैं कुछ नहीं करती, फिर भी सभी लोग कहते हैं, "श्री माता जी आप हमें अथाह प्रेम करती हैं, आप हमें बहुत प्रेम करती हैं। यह सभी कुछ जो कार्यान्वित कर रहा है वह मैं नहीं हूँ, यह मुझसे ऊपर है। इस स्थिति में, एक बार जब हम उठ जाते हैं, हम इसे सहज स्थिति का नाम देंगे।

सहज स्थिति में आप सोचते हैं कि आप कुछ नहीं कर रहे, सभी कुछ कार्यान्वित हो रहा है, परन्तु इस स्थिति में यदि मैं आपको बताऊं कि हम कुछ नहीं कर रहे। हमें सहजयोग का प्रचार क्यों करना चाहिए ? यह हमारा कार्य नहीं है, अब आपकी यह स्थिति नहीं है, इसीलिए। तो आपको उस अवस्था तक उन्नत होना होगा। वह तभी सम्भव है जब आप ज्ञान की अवस्था में होंगे, जहाँ आपको आत्मज्ञान प्राप्त हो जाएगा। पूरे विश्व का ज्ञान। परन्तु आपको इससे भी ऊपर जाना होगा। कई बार आपने देखा होगा कि मैं कुछ कहती हूँ और वह हो जाता है। **मैं किसी की चैतन्य लहरियाँ आदि नहीं महसूस करती। अपनी कुण्डलिनी या चक्र भी मैं महसूस नहीं करती परन्तु कम्प्यूटर की तरह स्वतः ही मैं सब कुछ जान जाती हूँ परन्तु मैं वह कम्प्यूटर भी नहीं हूँ।** यही कठिनाई है, आपको यह समझा पाना कठिन है क्योंकि आपने वह स्थिति प्राप्त करनी है। एक बार जब आप इसे प्राप्त कर लेते हैं तो आप अत्यन्त सूक्ष्म स्थिति में होते हैं और वह सूक्ष्म स्थिति आशीर्वाद के अतिरिक्त कुछ नहीं होती। परन्तु उस आशीर्वाद का आनन्द भी आप नहीं ले सकते।

मैं नहीं जानती कि हर चीज़ का आनन्द कैसे लिया जाए। मान लो अब आप कहें, "जय श्री माता जी", मैं भूल जाती हूँ कि आप मुझे कह रहे हैं। मैं भी कह उठती हूँ, "जय श्री माता जी"। समाप्त। देखिए यह इतनी साधारण चीज़ है। व्यक्ति को समझना है कि जिस स्थिति तक उसने उन्नत होना है उस स्थिति में बिना कुछ किए सभी कुछ कार्यान्वित होता है। आपकी यदि यही स्थिति है तो ठीक है परन्तु ऐसा नहीं है। कार्य करके आपको उस स्थिति तक उन्नत होना होगा, पहले आपको इसके लिए कार्य करना होगा। सर्वप्रथम आपको जानना होगा। ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं होती परन्तु पहले कार्यान्वित करके आपको इस स्तर पर आना होगा।

अब दिवाली का यह महत्व है कि दिवाली के दिन हम हर जगह चिराग जलाते हैं ताकि हम चहुँ ओर सहज प्रकाश को फैला सकें। परन्तु क्या प्रकाश स्वयं को जानता है ? क्या दीपक स्वयं को जानता है ? दीपक हर चीज़ को प्रकाशित करता है परन्तु उसे इसका ज्ञान नहीं होता। जैसे चाँद का चाँदनी बिखेरना, क्या वह स्वयं को जानता है ? क्या वह आनन्द उठाता है ? इसी प्रकार दिवाली के दिन आप भी लोगों को ज्योतिर्मय कर रहे हैं, यह सब आप उनके लिए कर रहे हैं। यह अच्छा विचार है, इसे आप अवश्य करें। **परन्तु आपको वह दीपक बनना है जो स्वयं को नहीं जानता।**

तो दो संदेश हैं। पहला तो यह कि

आपने पूरे विश्व को ज्योतिर्मय करना है। हमने अन्य लोगों को ज्योतिर्मय करना है, यह पहला संदेश है। फिर हमें वह बनना है जो प्रकाश स्वयं है, और प्रकाश नहीं जानता कि वह प्रकाश है। मैं प्रकाश हूँ, मैं स्वयं को नहीं जानती। यह वह स्थिति है कि आप नहीं जानते कि आप प्रकाश हैं। इतनी बार गाने के पश्चात् भी यह बात आपके मस्तिष्क में नहीं बैठती। आपने एक हजार नाम लिए हैं, सभी कुछ किया है, परन्तु मेरे मस्तिष्क में ये कभी नहीं आता कि आप मेरे विषय में ही ये सब कुछ कह रहे हैं। अब जब मैं यह कहती हूँ तो मैं नहीं जानती कि आप किस प्रकार प्रतिक्रिया करेंगे ? हो सकता है कि आपका अहं उभर आए और आप कहें, हाँ, हाँ मैं भी वही हूँ। ऐसे बहुत से लोग आए जिन्होंने कहा कि मैं माता जी से ऊँचा हूँ, बहुत सों ने कहा कि मैं (वे) कल्की हूँ। आजकल भी एक व्यक्ति जगह–जगह जाकर कह रहा है कि वह कल्की है। कोई बात नहीं। आप वह बनें, बहुत अच्छा विचार है। परन्तु जब मैं कहती हूँ कि मैं आदिशक्ति हूँ; तो इसका अर्थ यह होता है कि मैं नही जानती कि मैं क्या हूँ,वास्तव में, मुझे यह कहना पड़ा क्योंकि लोगों ने कहा "श्री माता जी आपको घोषणा करनी होगी।" किस चीज़ की घोषणा ? मैं जो हूँ, हूँ। अब मुझे लगता है कि घोषणा करने से आप लोगों का उत्थान बढ़ गया है, ठीक है, इसे प्राप्त करें। परन्तु किसी को भी कोई घोषणा करने की या कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।

यही स्थिति आपको प्राप्त करनी है। परन्तु उस स्थिति तक पहुँचने के लिए आपको कार्य करना होगा और वह कार्य है सहजयोग का प्रचार करना। आपको बहुत से दीप जलाने होंगे। अर्थात् आप महसूस करेंगे कि आप वह दीपक हैं जो अन्य दीप प्रज्जवलित कर रहा है, सूक्ष्म रूप से आप यह महसूस करेंगे कि मैं प्रकाश हूँ।' बहुत से सहजयोगी बहुत कार्य कर रहे हैं और सहजयोग को फैला रहे हैं। बहुत ही महान कार्य हुआ है जिस प्रकार ये बहुत से देशों में फैला है इसने धर्म के बाह्य अंधेरे को दूर कर दिया है। जातिवाद आदि का अन्धकार फैला हुआ है। तो इसने आपके लिए शुद्धिकरण का कार्य कर दिया है ताकि आपको तैरने के लिए शुद्ध जल मिल सके। एक बार जब आप ऐसा करने लगते हैं तो शनैः शनैः आप महसूस करते हैं कि अब समुद्र साफ है। हम केवल देखते हैं कि यह किस प्रकार कार्य कर रहा है।

मैं आशा करती हूँ कि अपने जीवनकाल में ही आप यह स्थिति प्राप्त करेंगे जिसमें अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने का कार्य पूर्ण कर सकेंगे। **जो लोग दूसरों को आत्मसाक्षात्कार नहीं देते, जो केवल पूजाओं के लिए आते हैं वे औसत दर्जे के लोग हैं। वे बहुत अधिक ऊँचे नहीं उठ सकते। पूजा पर आने का क्या अभिप्राय है ? पूजा से आप और ऊँचे उठते हैं, पुनः आपका पतन होता है, परन्तु जो लोग निरन्तर बढ़ते हैं वही इस स्थिति तक पहुँच पाएंगे।** मुझे विश्वास है कि अपने जीवनकाल में ही मैं कुछ ऐसे लोग देख पाऊँगी कि जो जहाँ खड़े हो जाएंगे उनसे शांति एवं प्रकाश प्रसारित होगा। वे सभी कुछ प्रसारित कर सकते हैं क्योंकि वे प्रकाश हैं, उन्हें प्रकाश करना नहीं पड़ेगा क्योंकि वे स्वयं प्रकाश हैं। ऐसी स्थिति आपको अपने अन्दर कार्यान्वित और

विकसित करनी पड़ेगी। इस स्थिति का वर्णन बहुत से कवियों तथा संतो ने किया है परन्तु वह मंच पर न थे और लोगों ने सोचा कि पता नहीं वह क्या बात कर रहे हैं। उन्होंने सोचा कि शायद ये पागल हैं। ईसा के लिए भी उन्होंने यही सोचा कि इन्हें क्रूसारोपित कर दिया जाना चाहिए, वे उन्हें समझ न सके। अब आप लोग कदम–कदम आगे बढ़ रहे हैं। अब आप ईसा को समझते हैं और इस स्थिति पर अभी भी आपको कार्य करना होगा। **जो लोग सहज के लिए कार्य नहीं करते वे ऊँचे नहीं उठ सकते। आपको सहजयोग के लिए कार्य करना होगा। इसे अधिक फैलाना होगा, कार्यान्वित करना होगा, परस्पर आनन्द लेना होगा।** जब तक आप वह स्थिति नहीं प्राप्त कर लेते तब तक आप उस स्थिति तक उन्नत नहीं हो सकते जिसका वर्णन मैंने 'सहज स्थिति' के नाम से किया है।

आज का दिन महालक्ष्मी का दिन है। पैसे का पागलपन, मेरे विचार से, पहली चीज़ है। यह समझ लिया जाना चाहिए कि यह वास्तव में पागलपन है। किसी धनवान व्यक्ति से आप पूछें तो वह कहता है, "ओह मेरे पास पैसा नहीं है।" ठीक है। ये क्या है ? किसी गरीब से आप पूछें तो उसके पास भी पैसा नहीं है। तो यह एक प्रकार का लोभ है जो कभी शांत नहीं होता। ये सारी चीजें पहले समाप्त हो जानी चाहिए तब आपका कार्य आपको शुद्ध करेगा। अपने कार्य में आप जान जाएंगे कि आप शुद्ध हो रहे हैं या नहीं, आप ये भी जान जाएंगे कि आप सभी कुछ किस प्रकार कर रहे हैं। एक बार जब ऐसा हो जाएगा तब मेरे जीवनकाल में ही आप में से कुछ वह स्थिति प्राप्त कर लेंगे।

आज, दिवाली के दिन, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि हमें सूक्ष्मतर होना होगा। बाह्य चीजों से हमें प्रभावित नहीं होना। बाह्य चीज़ें जैसे कोई फैशन शुरु हो जाता है। फैशन के पीछे दौड़ने वाले लोग मूर्ख हैं वे अन्धे चूहों सम हैं। कोई भी उन्हें किसी तरफ चला सकता है। अब ऐसा करो, और वे वैसा करते हैं। यदि आप अन्य लोगों द्वारा किए गए विचारों का अनुसरण करते हैं तो आप स्वयं को पूर्णतः खो देंगे और फिर "मैं हिन्दू हूँ, मैं इसाई हूँ, मैं मुसलमान हूँ" आदि बन जाते हैं। ये मूर्खतापूर्ण हैं और जब आप आत्मा बन जाते हैं तभी आपको ज्ञान होने लगता है और वह ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एक सन्त एवं सामान्य व्यक्ति में यही दूरी है जिसे शनैःशनैः आपने तय कर दिया है। अतः आप जानते हैं कि मानव की समस्याएं क्या हैं और ये भी समझ गए हैं कि उनसे व्यवहार किस प्रकार करना है।

सहजयोग में सामूहिक चेतना आधुनिक काल में आई है। यह सामूहिक चेतना संतों में थी परन्तु वे कुछ कहते न थे। किसी की चिन्ता न करते थे, इस व्यक्ति का यह चक्र खराब है, इसे भाड़ में जाने दो, ठीक है। एक बदसूरत व्यक्ति दर्पण के सम्मुख जाता है तो ठीक है और यदि कोई सुन्दर व्यक्ति दर्पण के सम्मुख जाता है तो भी ठीक है। दर्पण सम ये लोग बैठा करते थे।

परन्तु हमें समझना है कि अभी हमने उन्नत होना है। इसे कार्यान्वित करते हुए हमें उन्नत होना है। जो लोग इसे कार्यान्वित कर रहे हैं और चहुँ ओर इसे फैला रहे हैं वही वास्तव में बने हुए हैं और उनके लिए परम चैतन्य मात्र उनका नौकर है। मैंने देखा है कि लोग किसी चीज़ की इच्छा करते हैं

और वह पूरी हो जाती है। वे कुछ मांगते हैं, वह उन्हें मिल जाता है। इस स्थिति के लिए हमारे अन्दर क्या होना चाहिए, यह महत्वपूर्ण है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के पश्चात् सभी कुछ पा लेने के बाद हमारे पास क्या होना चाहिए कि हममें विश्वास विकसित हो सके। **स्वयं में विश्वास कि आप आत्मा हैं, आपके पास प्रकाश है और आपको अन्य लोगों को प्रकाशित करना है। जब यह विश्वास गहन से गहनतर हो जाता है तब आप सोचते हैं, ओह, मैं क्या हूँ ? मैं आत्मा हूँ। यदि आप आत्मा हैं तो यह पूरी प्रकृति आपके साथ है।** मैं कुछ सहजयोगियों को जानती हूँ, उनमें से एक मछुआरा है जिसे मुझ पर अथाह विश्वास है। एक बार सहजयोग का कार्य करने के लिए वह किसी दूसरे गाँव में जा रहा था। अपनी छोटी सी झोंपड़ी से जब वह निकला तो आकाश में काले बादल मंडरा रहे थे। अपना हाथ ऊपर को उठाकर उसने कहा, "देखो मैं माँ के कार्य के लिए जा रहा हूँ और वर्षा आरम्भ करने का साहस नहीं करना। जब तक मैं कार्य समाप्त नहीं कर लेता इसी स्थिति में लटके रहो। क्योंकि वो नाव से जा रहा था, अन्य सहजयोगियों ने सोचा पता नहीं ये क्या बातें कर रहा है ? वह नाव में चढ़ा, सभी लोग दूसरे गाँव पहुँचे, लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया, उसने अपना प्रवचन समाप्त किया। नाव में बैठकर वे लोग अपने गाँव वापस आए, जब वह अपने घर का दरवाजा बन्द करने लगा तो उसने कहा ठीक है, अब बरसो। **तो यह पूर्ण विश्वास होना आवश्यक है कि यह परम–चैतन्य आपके नौकर की तरह है और हर समय आपकी सेवा करने के लिए प्रतीक्षा करता रहता है। जो भी कुछ आप कहेंगे वह घटित होगा। परन्तु इससे पूर्व आपको पूर्ण विश्वास होना आवश्यक है कि आप सहजयोगी हैं।** अब भी मैं देखती हूँ कि लोगों में कामुकता तथा अन्य कई प्रकार के भयंकर दोष हैं। तो सर्वप्रथम आपका धर्म में स्थापित होना आवश्यक है। धर्म, जैसा कि आप जानते हैं, धर्मपरायणता है। यदि आप धर्मपरायण हैं तो फिर कोई प्रश्न नहीं है। कोई संदेह नहीं है कि यह परम चैतन्य आपकी आज्ञा नहीं मानेगा। **परन्तु मान लो आज आप कोई चीज़ चाहते हैं और यह उपलब्ध नहीं होती तो भी निराश होना अच्छी बात नहीं। निराशा भी आपकी अपरिपक्वता की निशानी है।** निराश होने की क्या बात है ? हो सकता है इसी में आपका हित हो। मान लो मैं रास्ता भटक जाती हूँ और नहीं जानती किधर जाऊं, तो मैं खो जाती हूँ, परन्तु सब ठीक है, क्या फर्क पड़ता है? जहाँ भी मै हूँ, हूँ। मैं स्वयं से किस प्रकार खो सकती हूँ ? और तब मुझे पता चलता है कि मुझे इसी रास्ते पर जाना था क्योंकि मुझे किसी व्यक्ति से मिलना था। किसी से मिलने के लिए मैं प्रतीक्षा कर रही थी और वह व्यक्ति मुझे वहाँ मिल जाता है। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं ? मेरे साथ ऐसी घटनाएं होती रहती हैं और यदि न भी हों तो क्या ? मुझे उस ओर जाना था, संभवतः मुझे वहाँ चैतन्य लहरियाँ देनी थीं। यह इस प्रकार है। अतः एक बार जब आप जान जाते हैं कि जो भी कुछ आप कर रहे हैं उस पर आपका पूर्ण नियन्त्रण है, पूर्ण विश्वास है तो पूरा नियन्त्रण आपके पास आ जाता है। आपके विश्वास से पूरी शक्ति आपमें आ जाती है, आपका एक–एक शब्द ऐसा हो जाता है

मानों आपको सत्य का ज्ञान हो। सत्य आपको शक्ति प्रदान करता है। यदि आपके साथ सत्य है, पूर्ण सत्य है, तो आपके पास शक्ति है और वह शक्ति ऐसी है जो केवल आपको अधिकार प्रदान करती है अन्य लोगों को नहीं। यह शक्ति जो आपमें है निरंतर कार्य करती है। मैंने अत्यन्त साधारण सहजयोगियों को देखा है, अत्यन्त साधारण, अशिक्षित भी, परन्तु वे अत्यन्त शक्तिशाली सहजयोगी हैं पर उनके पास एक चीज़ है विश्वास, पूर्ण विश्वास।

संस्कृत में एक शब्द है 'तितिक्षा' अर्थात् धैर्य (सबूरी) आपमें धैर्य होना आवश्यक है। यदि आपमें धैर्य नहीं है तो आप हर चीज़ को तुरन्त हुआ चाहते हैं। सभी कुछ कार्यान्वित हुआ आप किस प्रकार देखेंगे ? बहुत से लोग अत्यन्त घबराए हुए हैं और तेजी से दौड़ रहे हैं। ये विश्व बहुत तेजी से दौड़ रहा है। केवल आप लोग ही इस दौड़ से बाहर खड़े हैं और इस चूहा दौड़ को साक्षी रूप से देख रहे हैं। आप उनमें से नहीं हैं। अतः आप में सबूरी को होना आवश्यक है। स्वयं पर विश्वास रखें, पूर्णतः और ये देखने का धैर्य रखें कि सहजयोग किस प्रकार कार्यान्वित हो रहा है या परम चैतन्य किस प्रकार कार्य कर रहा है। यदि यह इस प्रकार होता है तो बिल्कुल ठीक हैं। यह अगर दूसरी प्रकार होता है तो इसका भी कोई अर्थ है।

अब एक अन्य महत्वपूर्ण चीज़ जो है वह है **अपने गुरु में आपकी श्रद्धा। यदि अपने गुरु के प्रति आपमें श्रद्धा है तो परम–चैतन्य दयालु है। परन्तु यदि आप गुरु पर संदेह करते हैं तो परम–चैतन्य भी आप पर संदेह करता है** क्योंकि परम चैतन्य आपको आपके गुरु के माध्यम से जानता है। यदि वो मैं हूँ या कोई अन्य सच्चा गुरु, एक ही बात है। परन्तु जैसा कि आप जानते हैं, मैं क्योंकि क्षमाशील हूँ लोग मेरे सम्मुख मनमानी करने लगते हैं। कोई अन्य गुरु यदि होता तो उनकी पिटाई कर देता। सभी प्रकार के दण्ड वह आपको देता। गुरुओं के विषय में मैंने आपको बहुत सी कथाएं बताई हैं कि वे अपने शिष्यों से किस प्रकार व्यवहार करते हैं। परन्तु मैं क्षमाशील हूँ, मैं कुछ नहीं कहती। मैं सोचती हूँ कि इन्हें स्वतंत्र कर देने से ये उन्नत होंगे और इस स्थिति तक पहुँच पाएंगे। परन्तु कई बार इसके विपरीत हो जाता है। एक बार क्षमा पाकर वे स्वयं को स्वतंत्र मान बैठते हैं। **तो स्वयं में विश्वास का अभिप्राय है कि धैर्यपूर्वक स्वयं को देखें और किसी भी चीज़ से निराश न हों।** अब कल्पना करें कि कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। विश्व में इतने सन्त हुए। कल आपने देखा कि मैं फ्रांस के लोगों को इतना अच्छा गाते हुए देखकर कितनी हैरान हुई! लय के लिए मुझे हारमोनियम उठाकर उनको गाने की एक लाईन सिखानी पड़ी थी। आधा घंटा तक कोशिश करने के बावजूद भी मैं उन्हें न सिखा सकी थी। वही फ्रांस के लोग आज सृजनात्मकता की उस स्थिति तक पहुँच गए हैं! आप जान लें कि आपकी सारी शक्तियाँ विकसित हो जाएंगी और अपनी अभिव्यक्ति करेंगी। परन्तु सावधान रहें कि आपको इस पर अहं नहीं होना चाहिए। शनैःशनैः ये पुष्प खिल उठेगा और आपके इर्द–गिर्द के लोग इसकी सुगन्ध से महक उठेंगे और सहजयोग में आ जाएंगे। यह आशीर्वाद है। उस समय, परमात्मा के आशीर्वाद से आप उस स्थिति तक उन्नत हो जाएंगे जिसे हम 'पूर्णत्व'

कहते हैं। यह पूर्णत्व आना आवश्यक है। **आप स्वयं को तोलें। क्या आप पूर्णतः सहज के साथ हैं ? क्या आप पूर्णतः सहज के प्रति समर्पित हैं ? या सहज की अपेक्षा अन्य चीज़ें आपके लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं आगे बढ़ें।** सहजयोग में एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि इसमें प्रतिस्पर्धा नहीं है। इसमें ईर्ष्या नहीं है और निन्दा भी नहीं है। आप एक संत हैं और इन सब चीज़ों से ऊपर हैं। आप बेईमान नहीं हैं, अन्य लोगों को धोखा नहीं दे सकते। और अब भी यदि आप ऐसा कर रहे हैं तो अभी आपने बहुत उन्नत होना है। कुछ लोग सोचते हैं कि वो सहजयोग में बहुत ऊंचे हो गए हैं। परन्तु ऐसी बात नहीं है। आप यदि ऐसा सोचते हैं तो आप खो गए हैं। आपको सोचना है कि मैंने क्या किया ? कितने लोगों को मैंने आत्मसाक्षात्कार दिया ? कितने लोगों से मैंने सहजयोग की बात की ? सहजयोग की बात करने में लोगों को शर्म आती है! पार्टियों में जाकर वो ये नहीं कह सकते कि मैं सहजयोगी हूँ, मैं शराब नहीं पी सकता। स्वभाव से ही मैं शराब नहीं पी सकता। **अतः घोषणा करना तीसरा भाग है–स्वयं में विश्वास रखें और उसकी घोषणा करें।** सभी संतों ने घोषणा की, इसके लिए उनकी हत्या तक कर दी गई, परन्तु आपको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। **सहजयोग के प्रति पूर्ण विश्वास, सहजयोग की पूर्ण समझ और फिर इसकी घोषणा।** लक्ष्य पूरे विश्व को परिवर्तित करना है। आपके परिवर्तन से ही पूरा विश्व परिवर्तित होगा। तब यह पूरा ज्ञान या आशीर्वाद एक हो जाएंगे। बिना जाने आप इस आनन्द की स्थिति में हैं। मैं आशा करती हूँ कि आप सब इस स्थिति को प्राप्त करेंगे।

दिवाली पुर्तगाल में मनाई जा रही है। मेरे विचार से यह महालक्ष्मी का विशेष स्थान है क्योंकि महालक्ष्मी, जैसा लोग बताते हैं और महालक्ष्मी सम चेहरे वाले स्वयंभु को भी हमने देखा है, यहाँ प्रकट हुई। अतः मुझे विश्वास है कि यह आप सबके लिए कार्यशील होगा। जिस स्थिति के बारे में मैं बात कर रही हूँ वह थोड़ी सी सूक्ष्म है। परन्तु मुझे आपको बताना है कि आपने यह स्थिति प्राप्त करनी है और इसे प्राप्त करना आपके लिए अत्यन्त सरल है। तब आपको कुछ नहीं करना। आप किसी गाँव में जाएं सभी कुछ कार्यान्वित हो जाता है। देखें क्या घटित होता है। मैं कैरो गई तो सभी लोग मुझे नमस्कार कर रहे थे। मैं हैरान थी कि क्या हो गया है! मैं उनके गाँव गई। हजारों लोग मेरे कार्यक्रम में आए। मैंने उनसे पूछा कि किस प्रकार आप मेरे कार्यक्रम में आए ? आपके चेहरे से ही स्पष्ट दिखाई पड़ता है, उन्होंने समाचार–पत्र में एक छोटा सा विज्ञापन देखा था। यह स्पष्ट है कि आप परमेश्वरी हैं। पर अब भी आप यह घोषणा नहीं कर सकते कि **सहजयोग ही एकमात्र रास्ता है!** हो सकता है साधक न हों। कोई बात नहीं। मेरे विचार से साधक तो सब आ चुके। अब उन लोगों तक भी पहुँचें जो साधक नहीं हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

अन्तर्राष्ट्रीय एकता प्रतिष्ठान

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

होटल क्लैरिजिस, नई दिल्ली – 6.4.1997

जहाँ तक प्रयत्नों का सम्बन्ध है, लोगों ने बहुत सी खोज की है, बहुत सी सभाएं की गईं और उन्होंने सबको विश्वस्त करने की कोशिश की कि बिना एकता के हम लोग जीवित नहीं रह सकते। कारण यह है कि यह विश्व एक है और हम सब इसके अंग–प्रत्यंग हैं। परन्तु हममें शरीर के भिन्न अवयवों की तरह एकरूपता नहीं है। शरीर में यदि कहीं काँटा चुभे तो पूरे शरीर को इसका पता चल जाता है। ऐसा हमारी जागृतिहीनता के कारण है। हमारी चेतना इतनी विकसित नहीं है कि हम अपने अन्दर इसे सामूहिक रूप से महसूस कर सकें। सामूहिक चेतना के विषय में बहुत समय पूर्व बताया गया था। परन्तु सब अस्पष्ट था। सामूहिक चेतना में कुण्डलिनी, जोकि आपकी अपनी शक्ति है, उठती है और परिणामस्वरूप आप विराट के (पूर्ण के) अंग–प्रत्यंग बन जाते हैं तथा अन्य लोगों के विषय में भी आपमें चेतना आ जाती है। इसे हम सामूहिक चेतना कहते हैं। इसे अच्छी तरह से समझने के लिए परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से एकाकारिता का अनुभव होना आवश्यक है। इसके विषय में हमने बाइबल, कुरान, हमारे सभी भारतीय धर्मग्रन्थों में सुना है। वर्णन किया गया है कि एक अति सूक्ष्म शक्ति है जो हमारे लिए सारा कार्य करती है। जब मैं इसके विषय में बताती हूँ तो थोड़े से लोग इस पर विश्वास करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि ये हमारी बुद्धि से परे है! परन्तु आपको अपने मन से ऊपर जाना होगा।

हमारा मन जिसे हम बहुत बहुमूल्य समझते हैं, अहम् तथा बन्धनों द्वारा बनाया गया है। मन मिथ्या है क्योंकि इसकी सृष्टि हमने स्वयं की है और हम स्वयं ही अपने मन के हाथों का खिलौना बन जाते हैं। जैसे हम कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं। कम्प्यूटर हमारे द्वारा बनाया गया है परन्तु यह हम पर शासन कर रहा है। इसी प्रकार यह मन हम पर शासन करता है और इसी मिथ्या मन से हम मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। मैं यदि कहूँ (आपको सदमा नहीं पहुँचना चाहिए क्योंकि आपकी मन से एकरूपता है) कि यदि यह पटरी से उतर जाए तो कोई भी पागल हो सकता है। किसी भी व्यक्ति या व्यर्थ की चीज़ को यह अत्यन्त उपयोगी मान सकता है। अतः मन मानव को युद्ध के गर्त में धकेल सकता है जिससे हमारे हृदयों में एकता समाप्त हो जाएगी। उदाहरणार्थ मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रही थी जिसे अलग राज्य चाहिए था। मैंने कहा, "आपको अलग राज्य क्यों चाहिए ?" उसने कहा, "तब हम दो प्रधानमंत्री बना सकेंगे।" मैंने कहा, "क्यों ?" क्योंकि वह स्वयं प्रधानमंत्री बनना चाहता था।

हमारा देश तीन और देशों में बँट चुका है, जैसे बर्मा, श्री लंका, पाकिस्तान और बांग्लादेश भी

भारत के ही भाग थे। अब यदि आप इन देशों में जाएं तो हैरान होंगे कि यहां दुर्दशा है। जो लोग इस कार्य के लिए लड़े, जिन्हें स्वाधीनता तथा भिन्न राज्य चाहिए था, उनमें से अधिकतर की हत्या कर दी गई। शेख मुजिबुर्रहमान, बण्डार नाइके, भुट्टो आदि। ये वे लोग थे जिन्हें पद चाहिए था और इस कारण उन्होंने यह कहना शुरु कर दिया कि हमें भिन्न राज्य चाहिएं, भिन्न पहचान चाहिए। किसको इससे लाभ हुआ? परन्तु अब भी वे इस बात को नहीं समझ पाए। पूर्ण से अलग हो कर उन्होंने कितने कष्ट उठाए हैं।

रूस में मैंने देखा है :– अब रूस में बेला रूसे (Bela Rousse) रूस में वापिस आने का प्रयत्न कर रहा है। मैंने यूक्रेन के लोगों से पूछा कि रूस से अलग क्यों हो रहे हैं ? तो इस प्रकार के विचार कि हमें एक देश से अलग होकर दूसरा देश बना लेना चाहिए, इस प्रकार से मुझे कोई देश उन्नति करते नहीं नजर आया।

आत्मसाक्षात्कार मिल जाने के पश्चात् आपके अन्दर एक नया आयाम विकसित हो जाता है। जिससे आप सामूहिक चेतना महसूस करते हैं। अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप जान सकते हैं कि आप में क्या दोष है और अन्य लोगों में क्या दोष हैं। एक बार यदि ऐसा हो जाए तो तेजी से एकता आती है। मैं स्वयं आश्चर्यचकित हूँ कि सहजयोग में किस प्रकार घटनाएं घटित हो रही हैं।

मैं रूस गई तो मुझे प्रवचन देने में संकोच हो रहा था। परन्तु जब मैं पहला प्रवचन देने के लिए गई तो दंग रह गई। दो हजार लोग सभागार के अन्दर बैठे थे और दो हजार बाहर। मैं समझ न पायी कि रूस के लोगों ने इतनी आसानी से मुझे कैसे समझ लिया! बाहर बैठे लोगों ने कहा कि हमारा क्या होगा ? हमारे लिए अन्दर बैठने के लिए जगह नहीं है। मैंने कहा कोई बात नहीं, मैं वापिस आऊंगी। अन्दर जा कर मैंने सब लोगों को साक्षात्कार दिया। जब मैं बाहर आई तब भी लोग बाहर बैठे हुए थे। उन्होंने पूछा कि हमारा क्या होगा ? मैंने कहा ठीक है मैं कल सुबह आऊंगी। रूस में बहुत से सुन्दर बाग हैं, मैंने उनसे कहा कि आप लोग आइए, मैं सीढ़ियों पर बैठ कर आपसे बात करूंगी। आप जान कर हैरान होंगे कि छः हजार लोग आए। मैंने पूछा आप लोगों का मेरी तरफ इतना झुकाव कैसे हो गया है? मैंने आप लोगों के लिए क्या किया है ? आप कैसे सोचते हैं कि मैं आपको कुछ विशेष दे सकती हूँ ? उन्होंने कहा यह स्पष्ट है। उनकी निश्छलता को देखकर मैं हैरान थी! मैंने देखा है कि रूस तथा पूर्वी ब्लाक के लोग अत्यन्त निश्छल हैं। इस संवेदना का सम्भवतः एक कारण यह भी है कि उनका शोषण हुआ है। जो भी हो उनके बन्धन समाप्त हो गए हैं। उनमें अधिकार भाव नहीं है। सरकार ने उन्हें कहा कि अपने फ्लैट ले कर खुशी से वहाँ रहो, पर उन्होंने कहा कि नहीं हमें फ्लैट नहीं चाहिए। उनमें स्वामित्व भाव बिल्कुल नहीं है। वे बिल्कुल शुद्ध हैं, बन्धन रहित क्योंकि उन्हें धर्म, परमात्मा या ऐसी अन्य चीज़ों के विषय में नहीं बताया गया जो हमारे देश में समस्याएं खड़ी कर रही हैं। मैं हैरान थी कि इन लोगों ने सहजयोग को आसानी से अपना लिया। अगले कार्यक्रम में दस हजार लोग आए। मैं रूसी भाषा नहीं जानती। उनका व्यवहार कितना अच्छा था कि दो सौ पचास वैज्ञानिकों के लिए हमने एक कार्यक्रम किया। रूस

में विज्ञान को अत्यन्त सूक्ष्म रूप से विकसित किया है। मैंने जब उन्हें विज्ञान के विषय में बताना शुरु किया तो उनमें से एक ने उठकर कहा कि माँ विज्ञान तो काफी हो चुका, कृपा करके आप हमें दैवी विज्ञान के विषय में बताएं। वे लोग वास्तव में अन्तर्दर्शी हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे मास्को में हुए सैनिक विद्रोह के कारण चिन्तित हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि हम क्यों चिन्ता करें हम तो परमात्मा के साम्राज्य में हैं।

बुद्धिजीवी लोगों के मस्तिष्क सदा उनके विचारों तथा योजनाओं पर होते हैं। कोई एक विशेष प्रकार के व्यक्ति से मिलता है और आक्रामक बन जाता है। दूसरा किसी और प्रकार के व्यक्ति से मिलता है और उससे एकरूप हो जाता है। आप जाकर किसी का भाषण सुनते हैं और वह भाषण आपके मस्तिष्क में बैठ जाता है। और इस प्रकार आपका चित्त हर समय बाह्य चीज़ों से ढका रहता है। जब तक ये आपके अपने अनुभव नहीं होते ये अस्पष्ट होते हैं। वह अनुभव प्राप्त करना बहुत आसान काम है। निःसन्देह हमारा देश महान लोगों का देश है। जब मैं चीन गई तो उन्होंने मुझसे पूछा श्री माता जी क्या ये हमारी चीन की संस्कृति का खजाना है। भारत अध्यात्म का खजाना है। उन्होंने इसके विषय में पढ़ा है, इसके विषय में जानते हैं और हमसे कुछ प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु यहाँ तो मुझे विशेष दिखाई नहीं देता। यहाँ पर तो हमारे पास स्वयं पर चित्त देने के लिए और स्वयं को जानने के लिए समय ही नहीं है। ईसा ने और मोहम्मद साहब ने कहा है कि जब तक आप स्वयं को नहीं पहचान लेते आप परमात्मा को नहीं जान सकते। आप स्वयं को जानें। आत्मज्ञान होना चाहिए और यह आत्मज्ञान आपको मन तथा विज्ञान से ऊपर ले जाएगा।

आप जानते हैं कि विज्ञान की अपनी सीमाएं हैं। सर्वप्रथम तो यह निर्नैतिक (Amoral) है। इसमें नैतिकता नहीं है इसलिए विज्ञान के साथ आप आगे नहीं बढ़ सकते। आप लोगों को मार सकते हैं, देशों को नष्ट कर सकते हैं और क्योंकि यह अनैतिक है। आपको कुछ महसूस नहीं होता। **अब नैतिकता का अर्थ बाह्य रोक–टोक नहीं, इसका अर्थ है करुणा, प्रेम, शुद्ध प्रेम।** आप समझ जाते हैं कि क्या करना चाहिए। परन्तु यदि आप बनावटी रूप से नैतिक बनने का प्रयत्न करते हैं तो ऐसे लोग अत्यन्त रूखे और क्रोधी हो जाते हैं। अन्दर से ये बात उठनी चाहिए कि आप शुद्ध आत्मा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। आप मस्तिष्क अहम् तथा भावनाओं से ऊपर हैं, आप शुद्ध आत्मा हैं। केवल जानना मात्र ही काफी नहीं, आपको बनना चाहिए, बनना ही विशेष बात है। यदि आप ऐसे बन जाते हैं तो आप ये जानकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि आप कितने महान हैं। आप न केवल सामूहिक रूप से चेतन हो जाते हैं, आप प्रेम तथा करुणा के स्रोत भी बन जाते हैं। जब तक यह घटित नहीं हो जाता, आप एकता नहीं ला सकते। उदाहरणार्थ मैं सहजयोग में कार्य कर रही हूँ, जिसे मैं सरकारी स्तर नहीं कहूंगी। मैंने कभी अपने पति के कार्यालय को परेशान करने का प्रयत्न नहीं किया। अपने आप मैंने यह आरम्भ किया। सर्वप्रथम थोड़े हिप्पियों से शुरु किया और शनैःशनैः यह इतनी मधुर चीज़ बन गई कि हम रूस और पूर्वी ब्लाक में भी प्रवेश कर सके। सभी यूरोप के देशों में, अमेरिका में तथा दक्षिण अमेरिका में गए। क्योंकि लोगों ने इसे महसूस

किया था। दक्षिण अमेरिका का एक भी व्यक्ति इसे प्राप्त करता है तो यह कहता है कि दक्षिण अमेरिका का क्या होगा ? आप कब दक्षिण अमेरिका आ रही हैं ? हमें आपकी बहुत आवश्यकता है। जब मैं वहाँ गई तो पाया कि वहाँ बहुत से साधक थे, उनकी दिलचस्पी सत्ता, धन तथा अन्य चीज़ों में न थी।

अब मैं आपको एक मधुर कहानी सुना दूं, वे दो बार अपनी मधुरता का प्रदर्शन कर चुके हैं पहला जब मैं रूस गई तो पच्चीस जर्मन लोग मास्को आए। वे सहजयोगी थे। मैंने उनसे पूछा कि वे कैसे यहाँ आए हैं तो कहने लगे कि श्री माता जी क्या आप ऐसा नहीं सोचती कि हम जर्मनी के लोगों ने बहुत से रूसी लोगों की हत्या की है। क्या अब यह हमारा कर्त्तव्य नहीं कि हम आकर उन्हें वह दे सकें जो हमने प्राप्त किया है ? इतना प्रेम और करुणा! ये जर्मनी के लोग इतने कोमल और विनम्र हैं कि आप सोच भी नहीं सकते कि उनमें हिटलर जैसी कोई चीज़ है। आस्ट्रिया के लोग, वे भी जर्मन हैं, इज़राईल गए। मैंने कहा आप इज़राईल क्यों गए, वहाँ तो आपके लिए कोई प्रबन्ध भी न था ? कहने लगे श्री माता जी हमने अपने को इज़राईली यहूदियों के लिए बहुत जिम्मेदार पाया क्योंकि हमारे देश में बहुत से यहूदियों की हत्या हुई जिसके लिए हम स्वयं को क्षमा नहीं कर सकते। अतः इस विषय में कुछ तो करना है। जर्मन लोगों का इज़राईल वासियों से जान–पहचान करके उनसे बातचीत करने की कल्पना कीजिए! उन्होंने कोई तीस युवा इज़राईलियों को पकड़ा। मैंने इज़राईलियों से पूछा कि आप यहाँ कैसे आए ? वे कहने लगे क्यों नहीं, हम मुसलमानों से दोस्ती करना चाहते हैं और इसलिए हम यहाँ पर हैं। मैंने कहा बहुत अच्छा विचार है। स्वतः ही वे एकता ला रहे हैं। मैं उन्हें नहीं कहती, अपनी सूझ–बूझ से वे यह कार्य कर रहे हैं। आन्तरिक सूझबूझ की आवश्यकता है, आन्तरिक एकता की, बाहरी दिखावे की नहीं। हम मानव यदि करुणा के सागर में उतर जाएं तो हममें बड़े–बड़े कार्य करने की क्षमता है और हम लोग यह इतने प्रेमपूर्वक करते हैं कि आप विश्वास ही नहीं कर सकेंगे कि ये मानव हैं! किस प्रकार यह मानव जीवन की सीमाओं से पूर्णतः ऊपर उठ गए हैं!

उस दिन मैंने एक महानुभाव के बारे में समाचार पढ़ा जो कह रहा था कि मैं जेहाद छेड़ रहा हूँ। किसलिए ? पश्चिम में व्याप्त चरित्रहीनता, मदिरापान तथा अन्य सभी बुराईयों से मुक्ति पाने के लिए। तो एक सहजयोगी ने मुझे टेलिफोन किया कि श्री माता जी इसके लिए एक जेहाद करने की आवश्यकता है? आप बस सहजयोग करें आपको इन सभी चीज़ों से मुक्ति मिल जायेगी। आप सभी को शराब की लत थी, सभी प्रकार की मूर्खता एवं चरित्रहीनता के कार्य हम किया करते थे परन्तु इसके लिए आपको जेहाद करने की आवश्यकता नहीं। इससे आपको स्वतः ही मुक्ति मिल जाती है। आप अत्यन्त शुद्ध होकर इन सब चीज़ों से ऊपर उठ जाते हैं। आपको उपाधि मिल जाएगी। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपके साथ ही यह घटित हो सकता है, यह कोई विशेष बात नहीं है। क्योंकि जब यह कुण्डलिनी उठती है तो यह कार्यान्वित करती है। वह आपकी अपनी माँ है। आपके विषय में वह सभी कुछ जानती है और जिस प्रकार वह आपको पुनर्जन्म देती है वह बहुत ही सुखद अनुभव है। आप सब, विशेषकर भारतीय,

लोगों में यह प्राप्त करने की योग्यता है। यहाँ बहुत से सूफी हैं। कमलों की तरह से वे खिल उठे हैं। हमें समझना चाहिए कि अपने पूर्व जन्मों के पुण्यकर्मों के कारण ही हम इस योग भूमि पर अवतरित हुए हैं। परन्तु समस्या यह है कि हम इस योग भूमि का लाभ नहीं उठा रहे हैं। ऐसा करना आपके हाथ में है। यह योग भूमि आपको परमात्मा के सभी आशीर्वाद दे सकती है। हमने इसका प्रयत्न किया है और इस परिणाम पर पहुँचे हैं।

अवस्था विज्ञान भी है। सहजयोग के माध्यम से मैं आपको बहुत सी चीजें बता सकती हूँ कि आपमें आत्माएं हैं तथा और भी बहुत सी चीज़ें हैं जिनका अब तक वर्णन नहीं किया जा सका है। उदाहरणार्थ मूलाधार नामक प्रथम चक्र कार्बन के अणुओं से बना हुआ है। कार्बन के अणुओं को जब आप देखेंगे तो हैरान हो जाएंगे कि बायीं ओर से देखने पर ॐ (ओंकार) सम दिखाई देते हैं। परन्तु इसी को जब आप नीचे से ऊपर देखते हैं तो ये अल्फा तथा ओमेगा (आदि–अंत) सम प्रतीत होते हैं। ईसा ने कहा है मैं ही आदि (अल्फा) हूँ , मैं ही अन्त (ओमेगा) हूँ और वे श्री गणेश का अवतार थे। इस बात को प्रमाणित किया जा सकता है। एक अन्य चीज़ जो है वह यह है कि एब बार जब आपको आत्मासाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो आप अपने हाथों से शीतल लहरियाँ अनुभव करने लगते हैं और परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति को अपने चहुँ ओर महसूस करते हैं। इससे आप जान जाते हैं कि आपका कौन सा चक्र पकड़ा हुआ है। दाएं और बाएं दोनों हाथों पर सात–सात चक्र हैं। अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप आसानी से भिन्न चक्रों को महसूस कर सकते हैं। एक छोटा सा बच्चा भी इन्हें महसूस कर सकता है। कोई भी साक्षात्कारी आपको बता सकता है कि आपमें क्या परेशानी है या उनके अपने अन्दर क्या दोष है। दस साक्षात्कारी बच्चों की आँखों पर यदि पट्टी बाँधकर आप बिठा दें और कोई व्यक्ति उनके सम्मुख खड़ा करके उनसे पूछें कि इसका कौन सा चक्र पकड़ रहा है तो वे सभी एक ही अंगुली उठाएंगे, क्योंकि यह पूर्ण ज्ञान है। यदि वे तर्जनी उठाते हैं तो इसका अर्थ ये हुआ कि उसके गले में कोई खराबी है। वह व्यक्ति आपको पूछेगा कि मैंने तो आपको नहीं बताया आप कैसे जान गए। मैंने कहा कि यह इस शक्ति, इस ज्ञान द्वारा बताया गया है।

इस देश में हम बहुत से लोग झूठ मूठ के गुरुओं के कारण कष्ट उठा रहे हैं। यह लोग वैभवशाली लोगों को पकड़ते हैं और बहुत धन लूट रहे हैं। किसी भी शहर में जाकर यह धनी लोग खोज लेते हैं। ऐसे लोगों को आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर पहचान सकते हैं। कुरान में कहा गया है कि कयामा के समय आपके हाथ बोलेंगे और आपको अपने तथा अन्य लोगों के विषय में बताएंगे। आप यदि इन चक्रों को ठीक करना सीख लें तो अपने तथा अन्य लोगों के चक्रों को भी ठीक कर सकते हैं। यह सातों चक्र ही आपके शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक तथा सर्वोपरि आपके आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए जिम्मेदार हैं। तो आप ऐसा कर सकते हैं और यही वह व्यक्तित्व है जो पूर्ण मानव है। जिसमें कोई द्वंद नहीं है। वह अन्दर से पूर्णतः शान्त होगा और बाहर से अत्यन्त निर्मल तथा प्रेममय। वह सभी के ह्रदय जीत लेगा। हमारे एक सहजयोगी थे जो पहले लन्दन में थे। फिर इटली चले गए। इटली जाकर मुझसे कहने लगे

कि श्री माता जी मैं अत्यन्त हताश हूँ। यहाँ कोई अन्य सहजयोगी नहीं है। मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है। तब हमने वहाँ एक कार्यक्रम किया और अब रोम में हजारों सहजयोगी बन गए हैं। इस प्रकार सहजयोग फैलना शुरु हुआ। मैंने इसे नहीं फैलाया है। जहाँ तहाँ जाकर सहजयोगियों ने यह कार्य किया। मानो कुछ बीज़ों को यहाँ से स्थानान्तरित करके भेज दिया गया हो और वहाँ अंकुरित होकर सहजयोग वृक्ष लहलहा उठा हो। हैरानी की बात है कि इन सहजयोगियों में अत्यन्त प्रेम है।

अब अफ्रीका में 400 अत्यन्त दृढ़ सहजयोगी हैं। अभी तक मैं कभी अफ्रीका नहीं गई। हैरानी की बात है कि अफ्रीका के एक शहर में 400 सहजयोगी हैं। अब ये क्या कर रहे हैं– बस अधिकाधिक सहजयोगी बना रहे हैं। यही उनकी कार्यशैली है। वे कहते हैं कि यदि आपको मानसिक शान्ति चाहिए तो आत्मसाक्षात्कार एकमात्र उपाय है। यही माँ का 'प्रलोभन' है। माँ ने यदि औषधि भी देनी हो तो चाकलेट में मिलाकर देती हैं। इसी प्रकार आप भी कह सकते हैं कि यदि वास्तव में आप मानसिक शान्ति चाहते हैं, एकता चाहते हैं तो यह कार्यान्वित हो सकती है। आरम्भ में ही मैंने आपको बताया था कि यह अति महान विद्या है और यदि वह विद्या आपके पास है तो सहजयोग बहुत ही तेजी से बढ़ेगा क्योंकि लोगों में स्वाभाविक, स्वतः और अन्तर्जात प्रेम उत्पन्न करने का यही एकमात्र मार्ग है। हर वर्ष, हर माह हमारे कार्यक्रम होते हैं। गणपति पुले नामक दूरदराज़ एक स्थान पर हमारा कार्यक्रम होता है। गरीब, अमीर सभी प्रकार के लोग विश्व भर से वहाँ आते हैं। धनाभाव होने के कारण इन लोगों के लिए वहाँ हमारे पास अधिक प्रबंध भी नहीं होते। फिर भी लोग वहाँ आते हैं और जहाँ हो सकता है हम उन्हें ठहरा देते हैं और वे इसका आनन्द लेते हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या यहाँ आपको कष्ट नहीं होता? तो कहने लगे श्री माता जी हम तो केवल आत्मसुख खोज रहे हैं। यही सुखदायी होता है। वहाँ ये लोग मुझे छोटी–छोटी सुविधाओं के लिए परेशान नहीं करते। सभी राष्ट्रों के लोग मिलकर आनन्द लेते हैं। इतनी शान्तिमय तारतम्यता, इतना सुन्दर आनन्द प्रवाह! निःसन्देह कभी–कभी वे एक दूसरे की टाँगें भी खींचते हैं, परन्तु सदैव वे आनन्द और खुशी से परिपूर्ण होते हैं। विरोध और प्रतिस्पर्धा जैसी तुच्छ चीजें समाप्त हो जाती हैं। यह दोष उन्हें पसन्द नहीं है क्योंकि वे सन्त बन चुके हैं और लोग कहते हैं कि ये परमात्मा के बन्दे हैं तथा वे इस दिव्य प्रेम के उत्तराधिकारी बन जाते हैं। वे केवल इसके योग्य ही नहीं, ये उनका जन्मजात अधिकार है। उनकी संख्या आश्चर्यचकित रूप से बढ़ रही है। मेरी तो समझ में ही नहीं आता क्योंकि कभी तो केवल एक दो सूफी हुआ करते थे जो कष्ट झेलते रहते थे। सहजयोगी कभी तुर्की भाग रहे हैं कभी ट्युनिशिया। ट्युनिशिया में तो मैं यह देखकर हैरान थी कि ज्यों ही लोगों ने आत्मसाक्षात्कार लिया उनकी छोटी–छोटी समस्याएं समाप्त हो गई। निःसन्देह यह आपको रोगमुक्त करता है। इसमें कोई बड़ी बात नहीं। रोगमुक्त करके यह व्यक्ति को पूर्ण मानसिक शान्ति प्रदान करता है। आप अपने आप में तथा अन्य लोगों के प्रति शान्त होते हैं क्योंकि आपमें शान्ति भाव विकसित हो जाता है जिसके द्वारा आप मात्र देखते हैं, प्रतिक्रिया नहीं करते और इस प्रकार स्वयं